Postal Reg. No.GDP45/2023-2025

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ   نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ   وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

अल्लाह तआला का आदेश

نَزَّلَ عَلَیۡکَ الۡکِتٰبَ
بِالۡحَقِّ مُصَدِّقًا لِّمَا بَیۡنَ یَدَیۡہِ وَاَنۡزَلَ
التَّوۡرٰىۃَ وَالۡاِنۡجِیۡلَ ○

(सूरः आलेइमरान: 4)

अनुवाद : उसने तुम्हारे पास सत्य के साथ किताब उतारी है, जो उससे पहले की किताबों की पुष्टि करती है, और वही है जिसने तौरात और इंजील उतारी।

वर्ष- 10
अंक - 43-44
मूल्य
600 रुपए
वार्षिक

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

Weekly
BADAR Qadian
HINDI

संपादक
शेख़ मुजाहिद अहमद

उप संपादक
सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद

30-07 रबीउल् सानी, 1446-47 हिज्री कमरी, 30-23 इख़ा 1404 हिज्री शम्सी, 23-30 अक्तूबर 2025 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दो लिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण आप पर अपना फ़ज़ल नाज़िल करता रहे। आमीन

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की वाणी

हज़रत मिक़दाद बिन असवद (रज़ियल्लाहु अन्हो) का अति महान कारनामा

तारिक बिन शहाब वर्णन करते हैं कि उन्होंने हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ियल्लाहु अन्हो) को यह कहते हुए सुना कि मैंने मिक़दाद बिन असवद का एक ऐसा कारनामा देखा है कि उसकी तुलना में मेरी सारी नेकियाँ कुछ भी भार नहीं रखतीं और मेरी यह इच्छा है कि काश यह काम मैंने किया होता। हज़ूर (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) (बद्र के युद्ध के अवसर पर) मुशरेकीन के विरुद्ध लड़ने का आह्वान कर रहे थे (और अपने सहाबा (रज़ियल्लाहु अन्होम) से पूछ रहे थे कि क्या वे युद्ध के लिए तैयार हैं या नहीं)। उस समय मिक़दाद बिन असवद उठे और हुज़ूर (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) की सेवा में प्रार्थना की कि हुज़ूर! हम वैसा नहीं कहेंगे जैसा मूसा (अलैहिस्सलाम) की कौम ने कहा था कि जा तू और तेरा रब लड़ें (हम तो यहाँ बैठेंगे और शत्रु के सामने नहीं जाएँगे), बल्कि हुज़ूर! हम आप (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) के दाहिने भी लड़ेंगे और आप (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) के बाएँ भी, आगे भी और पीछे भी (हर हाल में आपका साथ देंगे)। यह सुनकर हज़ूर (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) इतने प्रसन्न हुए कि आप (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) का चेहरा-ए-मुबारक प्रसन्नता के कारण चमक उठा।

(बुख़ारी, किताब अल्-मग़ाज़ी, किस्सा ग़ज़वा-ए-बद्र, बाब कथन अल्लाह तआला "इज़ तस्तग़ीसून रब्बकुम") (हवाला: हदीक़ातुस्सालेहीन, हदीस 997, संकलन कर्ता : मलिक सैफुर्रहमान साहिब)

★ ★ ★

वह तो खेलकर वापस आ जाएँगे, परन्तु मैं वह क्रिकेट खेल रहा हूँ जो क़यामत तक क़ायम रहेगा

हज़रत अकदस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का उपदेश

प्रगतियाँ अनंत हैं

फ़रमाया: "बहिश्त में भी मोमिनीन के लिए प्रगतियाँ होती हैं और प्रगतियाँ अंबिया के लिए भी हैं, वरना दरूद-ए-शरीफ़ क्यों पढ़ा जाता है? हमारा यह मज़हब है कि प्रगतियाँ अनंत (ग़ैर मुंतहा) हैं।"

आप (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) का अति महान कारनामा

फ़रमाया: "मसीह (अलैहिस्सलाम) को तो लोग इतनी लंबी उम्र देने के लिए व्यर्थ प्रयास करते हैं। उनकी थोड़ी सी उम्र ने क्या परिणाम पैदा किया है जो बड़ी उम्र की इच्छा की जाए? दुनिया 'सलीब परस्ती' (ईसाईयत) से भर गई है और हर जगह शिर्क (अनेकेश्वरवाद) फैल गया है। हाँ, यदि इतनी उम्र का पाना किसी के लिए संभव होता तो हज़रत रसूल-ए-करीम (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) उसके सबसे अधिक हक़दार थे, जिन्होंने थोड़ी सी उम्र में एक दुनिया मुवह्हिदीन (एकेश्वरवादियों) से भर दी और उनके दिल में ख़ुदा की मुहब्बत का सच्चा जोश भर दिया।"

वह क्रिकेट जो क़यामत तक खेली जाएगी

क़ादियान के मदरसा 'तालीमुल इस्लाम' के लड़कों का गेंद-बल्ला खेलने में मैच था। कुछ बुज़ुर्ग भी बच्चों की ख़ुशी बढ़ाने के लिए मैदान में तशरीफ़ ले गए। हज़रत अकदस (अलैहिस्सलाम) के एक साहिबज़ादे ने बचपन की सादगी में आप (अलैहिस्सलाम) से कहा कि अब्बा, आप क्रिकेट पर क्यों नहीं गए? आप (अलैहिस्सलाम) उस समय तफ़सीर सूरा फातिहा लिखने में व्यस्त थे। फ़रमाया:

"वह तो खेलकर वापस आ जाएँगे, परन्तु मैं वह क्रिकेट खेल रहा हूँ जो क़यामत तक क़ायम रहेगा।"

(मल्फ़ूज़ात, भाग 2, पृष्ठ 93-94, एडिशन 2018, क़ादियान)

इस्लाम कहता है कि मनुष्य को शाश्वत जीवन के लिए पैदा किया गया है और शाश्वत आध्यात्मिक प्रगतियों का मार्ग उसके लिए खोला गया है मृत्यु के पश्चात पुनरुत्थान पर विश्वास ही एक ऐसी चीज़ है जो मनुष्य के भीतर अल्लाह तआला का भय और उसकी प्रेम उत्पन्न करती है और उसके कर्मों के सुधार का एक महत्वपूर्ण साधन है।

सैय्यदना हज़रत मुस्लेह मौऊद (रज़ियल्लाहु अन्हो) सूरा अल्-मोमिनून, आयत नंबर 38 की तफ़सीर में फ़रमाते हैं:

اِنۡ ہِیَ اِلَّا حَیَاتُنَا الدُّنۡیَا نَمُوۡتُ وَنَحۡیَا وَمَا نَحۡنُ بِمَبۡعُوۡثِیۡنَ

"इन हिया इल्ला हयातुना दुनया नमूतु व नहया व मा नहनु बिमब'सीन" (सूरा अल्-मोमिनून, 23:38) में अल्लाह तआला ने यह बताया है कि मुनकेरीन-ए-अंबिया (पैग़म्बरों के इन्कार करने वालों) के इन्कार का दूसरा कारण यह होता है कि वह लोग मृत्यु के पश्चात पुनरुत्थान के इन्कार करने वाले होते हैं और इस कारण से उनके भीतर अपने कर्मों के अच्छे या बुरे होने के विषय में कभी सही अनुभूति पैदा नहीं होती। वह जिस राह पर चल रहे होते हैं, उस पर आँखें मूँदकर चलते चले जाते हैं और सोचते हैं कि हमारा काम इतना ही है कि हम खाएँ-पीएँ और इस कुछ दिनों की ज़िंदगी को आराम और सुख में बिता दें। यही कारण है कि जब अल्लाह तआला के पैग़म्बर उनके पास ख़ुदातआला का संदेश लेकर आते हैं, तो वह चूँकि उनके विश्वासों और कर्मों में एक अति महान परिवर्तन पैदा करना चाहते हैं, इसलिए उन्हें एक झटका लगता है और वह यह शोर मचाना शुरू कर देते हैं कि तुम हमें ख़ुदातआला के अज़ाब से क्या डराते हो? हमारा तो यह विश्वास ही नहीं है कि हम मरकर फिर से जीवित होंगे। इसलिए हमें किसी जवाबदेही का क्या ख़तरा हो सकता है? हम जो भी कर्म करेंगे, अपनी इस कुछ दिनों की ज़िंदगी के लिए करेंगे और हम अपने लाभ और हानि को समझने की पूर्ण योग्यता रखते हैं। इसलिए तुम हमें आख़िरत के अज़ाब से मत डराओ।

वास्तविकता यह है कि मृत्यु के पश्चात पुनरुत्थान पर विश्वास ही एक ऐसी चीज़ है जो मनुष्य के भीतर अल्लाह तआला का भय और उसकी प्रेम उत्पन्न करती है और उसके कर्मों के सुधार का एक महत्वपूर्ण साधन है। यदि आने वाले जीवन (आख़िरत)

शेष पृष्ठ 07 पर

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

ख़ुत्बः जुमअः

हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की पवित्र सीरत का विवरण: ग़ज़वा-ए-तायफ़ और ग़ज़वा-ए-हुनैन के परिप्रेक्ष्य में

आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने हकीम बिन हज़ाम को पहले एक सौ ऊंट और फिर उनकी दरख्वास्त पर और दो सौ ऊंट अता फ़रमाए और फ़रमाया: हे हकीम! यह माल अच्छा और मीठा है।

जो इसे नफ्स की बे-रग़बती (निस्पृहता) से लेगा तो उसमें बरकत होगी और जो इसे नफ्स की हिर्स (लालच) और लालच से लेगा तो उसमें बरकत नहीं होगी।

वह उस आदमी की तरह है जो खाता है लेकिन संतुष्ट नहीं होता।

ऊपर वाला हाथ यानी देने वाला हाथ, नीचे वाले हाथ यानी लेने वाले हाथ से बेहतर होता है।

पिछली नुसरत-ए-इलाही (खुदा की सहायता) के नज़ारों की रोशनी में तायफ को फतह करना भी कोई ज़्यादा मुश्किल और नामुमकिन अम्र नहीं था, लेकिन आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने बाहरी तौर पर हार को स्वीकार किया और मुहासरा (घेराबंदी) खत्म करने का एलान फ़रमाया। तो दरअसल आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की सीरत का एक बहुत ताबनाक (चमकीला) पहलू हमें नज़र आता है कि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की यह लश्कर-कशी भी दरअसल किसी नफ्सानी जोश के तहत नहीं थी, माल-ए-गनीमत हासिल करने या ज़मीनों को फतह करने के लिए नहीं थी, बल्कि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की एक-एक हरकत और सुकून और क़ौल व फ़ेल (वचन और कर्म) खुदाए अलीम व खबीर की मर्ज़ी के ताबे (अनुसार) थे।

आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की वुसअत-ए-हौसला (दिल की चौड़ाई) और रहमत का यह आलम था कि बाहरी तौर पर उद्देश्य हासिल किए बिना जा रहे थे, लेकिन आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उनके लिए बद-दुआ के बजाय यह दुआ की:

اَللّٰهُمَّ اهْدِ ثَقِيْفًا وَأْتِ بِهِمْ مُسْلِمِيْنَ۔ "अल्लाहुम्मह्दि सक़ीफ़न वा अति बिहिम मुस्लिमीन"

(हे अल्लाह! सक़ीफ (कबीले) को हिदायत दे और उन्हें मुसलमान बना कर ले आ)।

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने ग़ज़वा-ए-हुनैन के बाद कुरैश को अमवाल (धन-संपत्ति) देने की एक हिकमत बयान करते हुए फ़रमाया:

إِنِّيْ أُعْطِيْ قُرَيْشًا أَتَأَلَّفُهُمْ، لِأَنَّهُمْ حَدِيْثُ عَهْدٍ بِجَاهِلِيَّةٍ "इन्नी उ'ती कुरैशन अता-अल्लफुहुम, लि-अन्नहुम हदीसु अहदिन बि-जाहिल्लिय्यह"

(यानी मैं कुरैश को देकर उनके तालीफ-ए-क़ल्ब का सामान कर रहा हूं, क्योंकि उन्हें कुफ्र से ताल्लुक तोड़े अभी ज़्यादा अर्सा नहीं हुआ, ईमान इतना मज़बूत नहीं है)।

सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम ने जंग-ए-हुनैन के बाद एतराज़ करने वाले एक मुनाफिक के बारे में कहा: "या रसूलल्लाह! एक शख्स ज़ाहिर कुछ और करता है और उसके दिल में कुछ और होता है, क्या ऐसा शख्स सज़ा का मुस्तहिक़ नहीं?"

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "मुझे खुदा ने यह हुक्म नहीं दिया कि मैं लोगों से उनके दिलों के ख्यालात के मुताबिक मुआमला करूं। मुझे तो यह हुक्म दिया गया है कि मैं लोगों से उनके ज़ाहिर के मुताबिक मुआमला करूं।"

ग़ज़वा-ए-ताइफ और ग़ज़वा-ए-हुनैन के तनाज़ुर (परिप्रेक्ष्य) में सीरत-ए-नबवी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का पाकीज़ा बयान

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मौ'मेनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 19 सितम्बर 2025 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ
رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔ إِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ إِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔
اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ ۔ صِرَاطَ الَّذِيْنَ أَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ
وَلَا الضَّآلِّيْنَ

पिछले उपदेशों में ताइफ के युद्ध का उल्लेख हो रहा था। इस अवसर पर एक सहाबी जो उनसे बात करने के लिए गए थे और ताइफ वालों ने उनकी सुरक्षा की गारंटी भी दी थी कि उन्हें कुछ नहीं कहा जाएगा, लेकिन जब वे किले के निकट पहुँचे तो उन्हें शहीद कर दिया गया और उन लोगों ने वचनभंग किया। लेकिन ताइफ वासियों की इस वचनभंग के बावजूद पैगम्बर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने सुलह की कोशिश नहीं छोड़ी। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने दोबारा हज़रत हंज़ला बिन रबीअ रज़ियल्लाहु अन्हु को तायफ वालों की ओर भेजा। जब वे किले के निकट पहुँचे और बातचीत का सन्देश भेजा तो उनके कुछ लोग वार्ता के लिए बाहर आए और हज़रत हंज़ला रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा कि क्या तुम लोग सुलह चाहते हो या नहीं? वे लोग कुछ कहने के स्थान पर हज़रत हंज़ला रज़ियल्लाहु अन्हु पर आक्रमण कर दिया और उन्हें पकड़कर किले के भीतर ले जाने का प्रयास करने लगे। इस पर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने कहा: "कौन है जो हंज़ला को बचाकर लाएगा? जो भी उन्हें लेकर आएगा, उसे हमारे सभी योद्धाओं के बराबर पुण्य और प्रतिफल मिलेगा।" इस पर हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु दौड़ते हुए गए और मूर्तिपूजकों के चंगुल से हज़रत हंज़ला रज़ियल्लाहु अन्हु को छुड़ाकर ले आए। वापसी पर शत्रु ने किले से पत्थर भी बरसाए, लेकिन ये काफिरों के पथराव से सुरक्षित रहे।

(दायरा-ए-मआरिफ़ सीरत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम, भाग 9, पृष्ठ 353–352, बज़्म-ए-इक़बाल, लाहौर)

जैसा कि पिछले उपदेशों में पहले वर्णन हो चुका है कि ताइफ वालों और हवाज़िन कबीले के मक्का वासियों और विशेष रूप से कुरैश के साथ पारिवारिक और गहरे आर्थिक सम्बन्ध थे। एक-दूसरे से विवाह सम्बन्धों के माध्यम से भी सम्बन्ध थे। इस आधार पर सुलह के लिए हज़रत अबू सुफ़ियान बिन हर्ब रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत मुग़ीरा बिन शुआबा रज़ियल्लाहु अन्हु किले के भीतर गए, लेकिन उन्हें भी सफलता नहीं मिली, हाँ किले वालों ने यह प्रार्थना की कि मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से कहें कि हमारे बागों को क्षति न पहुँचाएं। खुदा के लिए और रिश्तेदारी के लिए उन्हें वैसे ही रहने दिया जाए। वे स्वयं किसी समझौते पर अमल नहीं करना चाहते थे लेकिन प्रार्थना कर रहे थे कि उन पर दया की जाए। यह उल्लेख हो चुका है कि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उनकी प्रार्थना पर उनके बागों को नष्ट करने का आदेश वापस ले लिया था।

(दायरा-ए-मआरिफ़ सीरत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम, भाग 9, पृष्ठ

359–358, बज़्म-ए-इक़बाल, लाहौर)आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के चरित्र का यह एक अद्वितीय पहलू है कि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने इतनी उच्च उदारता और साहस का प्रमाण दिया कि कई दिनों से घेराबंदी किए हुए थे और यह एक ऐसी सैन्य चाल थी कि यदि बागों को काटने का आदेश होता तो युद्ध का पलड़ा मुसलमानों की ओर झुक सकता था, लेकिन जब उन्होंने ख़ुदा का सहारा दिया और रिश्तेदारी का सहारा दिया तो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उनकी प्रार्थना स्वीकार कर ली और बाह्य रूप से एक बहुत बड़ी सैन्य हानि स्वीकार कर ली।

इस अवसर पर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने यह घोषणा करवाई कि जो दास किले की दीवार से उतरकर हमारे पास आ जाएगा, वह स्वतंत्र हो जाएगा। इस पर तेईस दास उतरकर मुसलमानों से आ मिले। ताइफ वासी इस पर बहुत दुखी हुए। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उन सभी को स्वतंत्र कर दिया। उनमें से एक-एक व्यक्ति को आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने एक-एक मुसलमान को सौंपा और पालन-पोषण की जिम्मेदारी उस मुसलमान पर डाली।

(शरह ज़रक़ानी अला मवाहिबुल् दुनिया, भाग 4, पृष्ठ 11 से 13, दारुल क़ुतुब इल्मिया, बैरूत, 1996 ई०)(सब्लुल् हुदा वल् इरशाद, भाग 5, पृष्ठ 384, दारुल क़ुतुब इल्मिया, बैरूत, 1993 ई०)

आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उन दासों के विषय में यह भी सलाह दी कि उनको अच्छी तरह धर्म की शिक्षा दी जाए। कुछ समय बाद जब ताइफ वालों ने इस्लाम स्वीकार कर लिया तो उन्होंने अपने उन्हीं दासों की बात की थी और ख़ुदा के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से प्रार्थना की थी कि हमारे दास हमें वापस लौटा दिए जाएं। इस पर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उनकी प्रार्थना अस्वीकार कर दी। उन दासों में से कुछ ने इस्लाम के इतिहास में पुण्य और ख़ुदा-भक्ति में नाम कमाया, जिनमें से एक हज़रत अबू बकरह रज़ियल्लाहु अन्हु भी थे।

(ग़ज़वा-ए-हुनैन, लेखक बाशमील, पृष्ठ 236–235, नफ़ीस अकैडमी)

एक अवसर पर उयैना बिन हिस्न फ़ज़ारी ने ख़ुदा के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से अनुमति चाही कि वह किले के भीतर जाकर बनू सकीफ कबीले को इस्लाम का निमंत्रण दे। उयैना बिन हिस्न का परिचय यह है कि यह अहज़ाब के युद्ध के अवसर पर काफिरों की ओर से बनू फ़ज़ारा कबीले का नेता था। अहज़ाब के युद्ध में काफिरों की पराजय के बाद भी उसने मदीना पर आक्रमण करने का इरादा किया था, लेकिन ख़ुदा के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने नगर से बाहर निकलकर उसके आक्रमण को रोका और उसे पीछे हटने के लिए विवश कर दिया। यह मक्का की विजय से पहले इस्लाम लाया था और उसमें भाग भी लिया था। मक्का की विजय के अवसर पर यह बाह्य रूप से मुसलमान था। हुनैन और ताइफ के युद्धों में भी भाग लिया। हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु के शासनकाल में बागी धर्मत्यागियों के साथ यह भी धर्मत्याग के फितने का शिकार हो गया और नबूवत के दावेदार और बागी तुलैहा की ओर झुक गया और उसकी शपथ ले ली और उसके साथ मिलकर इस्लामी सेनाओं के साथ उसने युद्ध किया, अर्थात इस्लामी सेनाओं के विरुद्ध युद्ध किया, और जब बुरी तरह पराजित होकर बन्दी बनाकर हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु के सामने प्रस्तुत किया गया तो उसने पश्चाताप प्रकट किया। हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु ने उसे क्षमा कर दिया और यह दोबारा इस्लाम ले आया और उस समय उसने यह भी कहा कि इससे पहले तो मैं कभी भी विश्वास लाया ही नहीं था। इसके विषय में लिखा है कि यह उद्धत स्वभाव और कठोर मुखमुद्रा वाला व्यक्ति था। अपने कबीले का प्रसिद्ध योद्धा और नेता था। इसके विषय में आता है कि पैगम्बर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उसे 'अल्-अहमक-उल-मुत्ता' कहा था, अर्थात ऐसा नेता और मार्गदर्शक है जो मूर्ख है।

बहरहाल, जब उसने कहा कि मैं जाता हूँ, तो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उसे अनुमति दे दी और उयैना किले में उन लोगों के पास पहुँचा और इस्लाम का निमंत्रण देने के स्थान पर बनू सकीफ से कहने लगा: "तुम लोग दृढ़ता के साथ अपने किले में डटे रहो, क्योंकि हमारी स्थिति तो एक दास से भी बदतर होती जा रही है।" एक परम्परा में ये शब्द भी हैं कि "देखो! किसी भी हालत में अपना किला मत छोड़ना और न किसी बात से प्रभावित और व्यग्र होना।" जब उयैना वापस ख़ुदा के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पास आया तो आपने पूछा: "उयैना! तुमने उन लोगों से क्या कहा था?" उसने कहा: "मैंने उन्हें इस्लाम स्वीकार करने की सलाह दी और धर्म का निमंत्रण दिया, नरक से डराया और स्वर्ग का मार्ग बतलाया।" जबकि ख़ुदा ने आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को इसकी सूचना वही (divine revelation) के माध्यम से दे दी थी कि यह वहाँ क्या कहकर आया है। अतः आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने कहा: "तुम झूठ बोल रहे हो। तुमने उन लोगों से यह-यह कहा है।" और आपने उयैना की वे सारी बातें दोहरा दीं जो उसने वहाँ कही थीं। यह सुनते ही उयैना आश्चर्यचकित रह गया। कहने लगा: "हे ख़ुदा के रसूल! आप सच कहते हैं। मैं अपनी इस हरकत पर आपसे और ख़ुदा से क्षमा याचना करता हूँ।"

(अस्सीरतुल हलबिय्यह, भाग 3, पृष्ठ 168; भाग 2, पृष्ठ 376, दारुल क़ुतुब इल्मिया, बैरूत, 2002 ई०)(अस्साबह, भाग 4, पृष्ठ 639, दारुल क़ुतुब इल्मिया, बैरूत, 1995 ई०)(अल-इस्तिआब, भाग 3, पृष्ठ 317, दारुल क़ुतुब इल्मिया, 2002 ई०)(हज़रत सैय्यदना अबू बक्र सिद्दीक़, लेखक मुहम्मद हुसैन हैकल, पृष्ठ 139, बुक कॉर्नर शोरूम)(दायरा-ए-मआरिफ़ सीरत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम, भाग 9, पृष्ठ 361–360, बज़्म-ए-इक़बाल, लाहौर)

लेकिन विश्वास बहरहाल अभी भी पूर्ण रूप से स्थिर नहीं हुआ था।

आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने घेराबंदी की स्थिति को देखते हुए हज़रत नौफल बिन मुआविया दैली से परामर्श किया तो उन्होंने निवेदन किया कि "यह तो ऐसा ही है जैसे लोमड़ी अपने बिल में घुसी हुई हो। इस पर खड़े रहेंगे तो पकड़ लेंगे और छोड़ देंगे तो वह क्षति पहुँचाने की शक्ति नहीं रखती। लोमड़ी अपनी गुफा में चली जाती है।" यह सुनकर ख़ुदा के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने घेराबंदी समाप्त करने का निर्णय कर लिया और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के माध्यम से लोगों में घोषणा करवा दी कि "यदि ख़ुदा ने चाहा तो कल वापसी होगी।"

(तबरी का इतिहास, द्वितीय खंड, पृष्ठ 172, दारुल क़ुतुब-उल-इल्मिया, बेरूत 1987 ई.)

ज्ञात होता है कि वास्तव में केवल परामर्श के परिणाम में ही नहीं, बल्कि ख़ुदा की ओर से भी आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को कोई विशेष मार्गदर्शन या संकेत मिला था, तो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने यह घेराबंदी उठा ली। अन्यथा आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की सैन्य अभियानों में यह पहला अवसर था कि बाह्य रूप से इतनी महत्वपूर्ण और आवश्यक विजय को बाह्य रूप से अधूरा छोड़कर आप वापस जा रहे थे।

टिप्पणी करने वाले और परम्पराएँ लिखने वाले जो भी लिखें, बहरहाल हमने इतिहास में यह देखा है कि इससे अधिक कठिन और असंभव युद्धों में ख़ुदा ने आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को असाधारण विजय और सहायता से सम्मानित किया था। बनू क़ुरैज़ा और ख़ैबर की विजयें इसकी ज्वलंत उदाहरण हैं। हुनैन की मिसाल भी उस समय निकटतम उदाहरण थी, उसे कैसे भुलाया जा सकता है। हुनैन के अवसर पर कुछ मक्का वालों को भी आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की पराजय का विश्वास था और उनमें से एक दल तो वास्तव में आपकी पराजय का तमाशा देखने के लिए साथ हो लिया था, लेकिन उस समय भी एक निश्चित पराजय को ख़ुदा ने आश्चर्यजनक, असाधारण और ऐतिहासिक विजय प्रदान की थी और ताइफ में तो वही भागा हुआ और पराजित सेना ही छिपी हुई थी और दबकर बैठी हुई थी। इस पूर्व में मिली ख़ुदाीय सहायता के दृश्यों के प्रकाश में ताइफ को जीतना भी कोई अत्यधिक कठिन और असंभव कार्य नहीं था, लेकिन आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने बाह्य रूप से इस हार को स्वीकार किया और घेराबंदी समाप्त करने की घोषणा की। तो वास्तव में आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के चरित्र का एक बहुत चमकीला पहलू हमें दिखाई देता है कि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की यह सैन्य कार्रवाई भी वास्तव में किसी मनोवेग के अधीन नहीं थी, लूट का माल प्राप्त करने या भूमि जीतने के लिए नहीं थी, बल्कि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की एक-एक गति और विराम तथा वचन और कर्म सर्वज्ञानी ख़ुदा की इच्छा के अनुसार थे और आपकी सारी जीवन इसी आयत के अनुसार थी कि "कह दो कि निश्चय ही मेरी नमाज़ और मेरी पूजा और मेरा जीवन और मेरी मृत्यु ख़ुदा ही के लिए है, जो सारे संसारों का पालनहार है।"

(सूरः ईनाम :163)

तायफ की घेराबंदी के अवसर पर दो बातें ऐसी हुईं, जिनसे स्पष्ट ज्ञात होता है कि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को ख़ुदा की ओर से यह मार्गदर्शन मिल गई थी कि यह घेराबंदी समाप्त कर दी जाए और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने तत्काल घेराबंदी समाप्त करने की घोषणा कर दी। इस सन्दर्भ में आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के एक स्वप्न का उल्लेख मिलता है। अतः इब्न हिशाम ने लिखा है कि ताइफ की घेराबंदी के अवसर पर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु से कहा: "हे अबू बक्र! मैंने आज स्वप्न में देखा है कि एक पात्र में मक्खन भरा हुआ मेरे पास उपहार में आया है। फिर एक मुर्गे ने चोंच मारकर उस पात्र को गिरा दिया।" हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु ने निवेदन किया: "मेरा विचार तो यह है कि इस बार आप सकीफ कबीले से जो चाहते हैं, वह प्राप्त नहीं कर सकेंगे। यह कबीला था।" अर्थात यह जो घेराबंदी की हुई है, उसका वह परिणाम नहीं निकलेगा जो हमारे पक्ष में हो या हमने सोचा हुआ है। विजय मिलनी कठिन लगती है। ख़ुदा के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने कहा: "मेरे विचार में भी इसकी प्राप्ति इस समय इस प्रकार असंभव है।"

(सीरत इब्न हिशाम, पृष्ठ 793, दारुल क़ुतुब इल्मिया, बैरूत, 2001 ई०)(दायरा-ए-मआरिफ़

सीरत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम, भाग 9, पृष्ठ 366, बज़्म-ए-इक़बाल, लाहौर)

इसी प्रकार एक परम्परा में यह भी आता है कि ख़ौला बिन्त हकीम (उनका नाम ख़वैला भी आया है) जो हज़रत उस्मान बिन मज़ऊन रज़ियल्लाहु अन्हु की पत्नी थीं, उन्होंने खुदा के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की सेवा में निवेदन किया कि "हे खुदा के रसूल! यदि खुदा आपको ताइफ की विजय प्रदान करे तो बादिया बिन्त ग़ैलान या फारिआ बिन्त अक़ील का आभूषण मुझे प्रदान करें, क्योंकि समस्त सकीफ कबीले में उन स्त्रियों के समान किसी स्त्री के पास मूल्यवान आभूषण नहीं है।" खुदा के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उससे कहा: "हे ख़ौला! यदि सकीफ पर विजय पाने की मुझे अनुमति ही नहीं दी गई तो फिर क्या?" हज़रत ख़ौला रज़ियल्लाहु अन्हा वहाँ से निकलीं और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से इसका उल्लेख किया। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की सेवा में आए और निवेदन किया: "हे खुदा के रसूल! ख़ौला कैसी बात कर रही है? वह कहती है कि यह बात आपने उनसे कही है।" आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने कहा: "हाँ, मैंने यह कही है।" हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु तुरन्त समझ गए और निवेदन किया: "क्या उनके विषय में आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को इस विजय के विषय में या इस युद्ध को जारी रखने के विषय में आज्ञा नहीं दी गई है?" आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने कहा: "नहीं।" हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने निवेदन किया कि "फिर मैं लोगों को प्रस्थान करने के लिए कह दूँ?" आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने कहा: "हाँ।" अतः अनुमति मिलने पर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने प्रस्थान का, यहाँ से वापसी का ऐलान करवा दिया।

(सब्लुल् हुदा वल् इरशाद, भाग 5, पृष्ठ 387, दारुल कुतुब इल्मिया, बैरूत, 1993 ई०)
(असदुल ग़ाबह, पृष्ठ 1509, मक्तबा दारुल इब्न हज़्म)

जब इस वापसी का ऐलान हुआ तो इस ऐलान पर कुछ लोगों ने यह प्रकट किया कि "हम बिना विजय के कैसे लौट रहे हैं?" ज्ञात होता है कि कुछ उत्साही युवाओं की यह प्रतिक्रिया थी। पहले तो वे हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की सेवा में उपस्थित हुए कि वे आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की सेवा में निवेदन करें कि विजय होने तक हम घेराबंदी जारी रखें, लेकिन उन्होंने कहा कि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने जो भी निर्णय किया है, वह सही है। हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने इस बात को कहने से मना कर दिया। इस पर यह भावुक युवा स्वयं आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की सेवा में उपस्थित हुए और बड़े भावुक ढंग से निवेदन किया कि "हुज़ूर! हम लड़ेंगे।" आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उनकी इच्छा पर कहा: "ठीक है, कल प्रातः लड़ो।" अतः वे लोग अगले दिन लड़ने के लिए निकले तो उन्हें घावों के सिवाय और कुछ नहीं मिला। इस पर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने कहा: "हम यदि खुदा ने चाहा तो कल वापस प्रस्थान करेंगे।" अर्थात युद्ध का कोई लाभ नहीं हुआ। घायल होकर वापस आए तो उन सभी ने भी प्रसन्नता प्रकट की और अब उनकी राय में परिवर्तन देखकर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम भी मुस्कुरा दिए।

(शरह ज़रक़ानी अला मवाहिबुल् दुनिया, भाग 4, पृष्ठ 13 से 14, दारुल कुतुब इल्मिया, बैरूत, 1996 ई०)(दायरा-ए-मआरिफ़ सीरत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम, भाग 9, पृष्ठ 368–367, बज़्म-ए-इक़बाल, लाहौर)

इस युद्ध में काफिरों के तीन लोग मारे गए। हाँ, उनके घायलों और अतिरिक्त मृतकों के विषय में कोई अधिक विवरण नहीं मिलता, क्योंकि ये लोग किले के भीतर ही घिरे रहे। इसी प्रकार मुसलमानों के घायलों की भी निश्चित संख्या ज्ञात नहीं है। कुछ घायलों के विषय में विवरण मिलता है, जैसे मूर्तिपूजकों की तीरंदाजी से घायल होने वालों में एक हज़रत अबू सुफ़ियान बिन हर्ब रज़ियल्लाहु अन्हु का उल्लेख मिलता है। एक तीर उनकी आँख में जाकर लगा, जिससे उनकी आँख बाहर निकल आई। ये सीधे खुदा के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पास आए और उस अवस्था में कि उनकी आँख उनके हाथ में थी, उन्होंने आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से निवेदन किया: "हे खुदा के रसूल! मेरी यह आँख खुदा के मार्ग में गई।" आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने कहा: "यदि तुम चाहो तो मैं प्रार्थना करूंगा और तुम्हारी यह आँख वापस अपने स्थान पर ठीक हो जाएगी, और यदि आँख न चाहो तो तुम्हें स्वर्ग प्राप्त होगा।" एक परम्परा में ये शब्द हैं कि "'ऐन' अर्थात आँख न चाहो तो स्वर्ग में तुम्हें 'ऐन' अर्थात दिव्य जल का स्रोत प्राप्त होगा।" अरबी भाषा में 'ऐन' के एक अर्थ आँख के होते हैं और स्रोत को भी 'ऐन' कहते हैं। अबू सुफ़ियान ने कहा: "मुझे तो स्वर्ग ही प्रिय है।" यह कहकर उन्होंने अपने हाथ से अपनी आँख फेंक दी। ये वही अबू सुफ़ियान हैं कि जो मक्का की विजय तक इस्लाम के कट्टर शत्रु थे और उहुद के युद्ध में काफिरों की सेना के सेनापति भी थे और अब मुसलमान होने के बाद भी बलिदानों में अग्रणी दिखाई दे रहे थे। विचित्र संयोग है कि उनकी दूसरी आँख यर्मूक के युद्ध में नष्ट हो गई थी।

(दायरा-ए-मआरिफ़ सीरत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम, भाग 9, पृष्ठ 373, बज़्म-ए-इक़बाल, लाहौर)

इसी प्रकार एक दूसरे सहाबी का उल्लेख मिलता है, वह हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु के पुत्र अब्दुल्लाह थे। उनका घाव इतना लम्बा चला और प्राणघातक सिद्ध हुआ कि अन्त में अपने पिता हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु के शासनकाल के समय उसी घाव के परिणाम में उनकी मृत्यु हो गई।

इस युद्ध में बारह सहाबी शहीद हुए, जिनके नाम ये हैं: हज़रत सईद बिन सईद बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हु, हज़रत उरफ़ता बिन जन्नाब रज़ियल्लाहु अन्हु, हज़रत अब्दुल्लाह बिन अबी उमय्यह रज़ियल्लाहु अन्हु, हज़रत अब्दुल्लाह बिन आमिर रज़ियल्लाहु अन्हु, हज़रत साइब बिन हारिस रज़ियल्लाहु अन्हु और उनके भाई अब्दुल्लाह बिन हारिस रज़ियल्लाहु अन्हु, हज़रत जुलैहा बिन अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु, हज़रत साबित बिन जज़ा रज़ियल्लाहु अन्हु, हज़रत हारिस बिन सहल रज़ियल्लाहु अन्हु, हज़रत मुन्ज़िर बिन अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु, हज़रत रुकैम बिन साबित रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत अब्दुल्लाह बिन अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु जो बाद में मृत्यु को प्राप्त हुए थे।

(सीरत इब्न हिशाम, पृष्ठ 795–794, दारुल कुतुब इल्मिया, बैरूत, 2001 ई०)

खुदा के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के साथ इस युद्ध में आपकी दो पवित्र पत्नियाँ हज़रत उम्म सलमा रज़ियल्लाहु अन्हा और हज़रत ज़ैनब रज़ियल्लाहु अन्हा थीं। इन दोनों के लिए दो तम्बू लगाए गए थे। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम घेराबंदी के दौरान इन दोनों तम्बुओं के बीच नमाज़ अदा करते थे।

(अत्तबक़ातुल कुबरा लिब्न सअद, भाग 2, पृष्ठ 120, "ग़ज़वत-ए-रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम अत-ताइफ़", दारुल कुतुब इल्मिया, बैरूत, 1990 ई०)

आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने ताइफ का कितने दिन घेराबंदी किया था, इस बारे में अनेक परम्पराएँ मिलती हैं। कुछ कहते हैं दस से कुछ अधिक रातें घेराबंदी किया। इब्न हिशाम कहते हैं कि यह भी कहा जाता है कि सत्रह रातें घेराबंदी किया। यह भी कहा जाता है कि बीस दिन घेराबंदी किया। कुछ कहते हैं कि आपने बीस से कुछ अधिक रातें घेराबंदी किया। एक परम्परा में आता है कि खुदा के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने तीस के लगभग रातें ताइफ वासियों की घेराबंदी किया। सहीह मुस्लिम में हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु से परम्परा है कि "हमने चालीस रातों तक उनकी घेराबंदी किया।"

(अस्सीरतुन नबविय्यह लिब्न हिशाम, पृष्ठ 792, "ज़िक्र ग़ज़वत अत-ताइफ़ बाद हुनैन", दारुल कुतुब इल्मिया, बैरूत, 2001 ई०)(सब्लुल् हुदा वल् इरशाद, भाग 5, पृष्ठ 388, "फ़ी ग़ज़वत अत-ताइफ़", दारुल कुतुब इल्मिया, बैरूत, 1993 ई०)(सहीह मुस्लिम, किताबुज़् ज़कात, "बाब इअता अल-मुअल्लफ़ति कुलूबुहुम 'अलल इस्लाम", हदीस संख्या 2442)

बहरहाल, जब प्रस्थान का समय आया तो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने कहा, यह पढ़ते हुए वापस लौटो: "हम लौटने वाले हैं, पश्चाताप करने वाले हैं, उपासना करने वाले हैं और अपने पालनहार की प्रशंसा करने वाले हैं।" आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से निवेदन किया गया: "हे खुदा के रसूल! बनू सकीफ कबीले के लिए अभिशाप करें।"

आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के हृदय की विशालता और दया का यह स्तर था कि बाहरी रूप से लक्ष्य प्राप्त किए बिना जा रहे थे, लेकिन आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उनके लिए अभिशाप के स्थान पर यह प्रार्थना की: "हे खुदा! सकीफ कबीले को मार्गदर्शन दे और उन्हें मुसलमान बना कर ले आ।"

इसके बाद जब आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम वहाँ से वापसी के लिए सवार हुए तो प्रार्थना की: "हे खुदा! उन्हें मार्गदर्शन प्रदान कर और उनकी आपूर्ति और रसद के मुकाबले में तू हमारे लिए पर्याप्त हो।" क्योंकि आपका वास्तविक उद्देश्य तो यह था कि भटकी हुई सृष्टि अपने स्रष्टा की ओर रुख कर ले। अतः खुदा ने आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की यह प्रार्थना इस प्रकार स्वीकार की कि यही ताइफ वाले अभी एक वर्ष भी नहीं बीता था कि नौ हिजरी के रमज़ान में सब के सब मुसलमान

CHANDIGARH DIAGNOSTIC LABORATORY
थाने वाला चौक, ठीकरीवाल रोड, नज़दीक केनरा बैंक, पंजाब एंड सिंध बैंक क़ादियान
सभी प्रकार के शारीरिक टैस्ट (खून, मल,बलग़म इत्यादि) कंप्यूटरराइज्ड तरीके से उपलब्ध हैं।
हमारे सहभागी :- SRL (SUPER RANBAXY LABORATORIES), THYROCARE MUMBAI.

चौधरी खिज़र बाजवा दरवेश क़ादियान, लुकमान अहमद बाजवा
और जानकारी के लिए संपर्क करें :- इमरान अहमद बाजवा, रिज़वान अहमद बाजवा
फ़ोन नंबर :-+91-9646561639,+91-8557901648

हो गए।

(शरह ज़रक़ानी अला मवाहिबुल् दुनिया, भाग 4, पृष्ठ 15 से 18, दारुल कुतुब इल्मिया, बैरूत, 1996 ई०)

हज़रत मसीह-मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने भी एक स्थान पर इस विषय में कथन किया है। आप रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि "आप (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) ताइफ की ओर प्रस्थान हुए। वही नगर जिसके निवासियों ने पथराव करते हुए मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को अपने नगर से निकाल दिया था। उस नगर का आपने कुछ समय तक घेराबंदी किया लेकिन फिर कुछ लोगों के परामर्श देने पर कि उनकी घेराबंदी करके समय नष्ट करने की आवश्यकता नहीं, समस्त अरब में अब केवल यह नगर ही क्या कर सकता है, आप घेराबंदी छोड़कर चले आए और कुछ समय बाद ताइफ के लोग भी मुसलमान हो गए।"

(दीबाचा तफ़सीरुल क़ुरआन, अनवारुल उलूम, भाग 20, पृष्ठ 357)

हुनैन की लूट के माल के बंटवारे का भी उल्लेख मिलता है कि पाँच ज़ुल-क़दा को आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ताइफ से जिअराना पधारे, जहाँ सभी बन्दी और लूट का माल एकत्रित था। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के आदेश पर उन बन्दियों से सद्व्यवहार का यह स्तर था कि उनके निवास के लिए अस्थायी निर्माण किए गए थे, ताकि सर्दी-गर्मी की तीव्रता से बचाव हो सके।

(सब्लुल् हुदा वल् इरशाद, भाग 5, पृष्ठ 640, दारुल कुतुब इल्मिया, बैरूत, 1993 ई०)
(ग़ज़वा-ए-हुनैन, लेखक बाशमील, पृष्ठ 265, नफ़ीस अकैडमी)

लूट के माल का विवरण इस प्रकार से था कि छह हज़ार दास और दासियाँ थीं। उनके निवास का प्रबन्ध किया गया। कुछ परम्पराओं में आठ हज़ार भी बताया जाता है। आज के युद्धों की तरह नहीं हैं जो शत्रुता करते हैं कि बने हुए घर उजाड़ देते हैं, गिरा देते हैं, जो आजकल इस्राइल में हो रहा है, बल्कि उनके लिए आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने आवास बनवाए। छह हज़ार से आठ हज़ार थे। लूट के माल में चौबीस हज़ार ऊँट थे। चालीस हज़ार से अधिक भेड़-बकरियाँ और चार हज़ार औकिया चाँदी, जो कि लगभग चार सौ नब्बे किलोग्राम बनती है। इससे पहले कभी भी मुसलमानों को इतना लूट का माल नहीं मिला था। ऐसे अवसर पर भी आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को अपने सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम की शिक्षा का इतना ध्यान था कि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने लूट का माल बाँटने से पहले घोषणा की कि "इस माल में से एक-पाँचवें हिस्से (खुम्स) के अतिरिक्त मेरा अधिकार भी वही है जिसका तुम में से हर कोई अधिकारी है और वह एक-पाँचवाँ हिस्सा भी अन्त में तुम्हारे पास ही लौट आएगा।"

इसके बाद कहा: "सूई और उसका धागा या उससे भी छोटी वस्तु यदि किसी के पास है तो वह वापस कर दे। विश्वासघात से बचो, क्योंकि प्रलय के दिन यह विश्वासघात करने वाले के लिए कलंक का कारण और एक धब्बा सिद्ध होगी।" यह घोषणा सुनकर एक सहाबी ऊँट के बालों से बनी हुई रस्सी का एक गोला लेकर आपकी सेवा में उपस्थित हुए कि "हे ख़ुदा के रसूल! मैंने फटी हुई काठी सीने के लिए यह धागा लूट के माल में से ले लिया था।" और एक अन्य सहाबी ने लूट के माल में से एक सूई उठाकर अपनी पत्नी को दी थी। वह यह घोषणा सुनकर तुरन्त अपनी पत्नी के पास गए और उससे वह सूई लेकर लूट के माल में वापस रख दी। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने लूट का माल बाँटने की शुरुआत की तो आरम्भ हृदयों को मिलाने से किया। ये अरब के बड़े लोग थे जिन्हें आपने पहले दिया। अपने-अपने कबीलों में प्रतिष्ठा और बड़प्पन का स्थान रखते थे। आपने उनको अनुकूल बनाने के लिए उपहार दिए। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उनमें से किसी को एक सौ ऊँट दिए, किसी को पचास ऊँट दिए। चाँदी और दास उसके अतिरिक्त थे।

एक पैगम्बर चरित्र की पुस्तक में लिखा है कि अबू सुफ़ियान बिन हर्ब को एक सौ ऊँट दिए। अबू सुफ़ियान जब ख़ुदा के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की सेवा में उपस्थित हुए तो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के सामने चाँदी का एक ढेर लगा हुआ देखा तो देखकर कहने लगे: "हे ख़ुदा के रसूल! आप तो क़ुरैश में सबसे अधिक धनवान हो गए हैं।" आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम मुस्कुरा दिए और अबू सुफ़ियान को चालीस औकिया चाँदी और एक सौ ऊँट दिए जाने का आदेश दिया। अबू सुफ़ियान ने कहा: "मेरे पुत्र यज़ीद को भी प्रदान करें।" आपने उसके लिए भी चालीस औकिया चाँदी और सौ ऊँट दिए जाने का आदेश दिया। यह यज़ीद अबू सुफ़ियान का पुत्र था। सामान्य रूप से जिस कुख्यात यज़ीद का उल्लेख इतिहास में मिलता है, वह अबू सुफ़ियान का पोता था, अर्थात हज़रत मुआविया का पुत्र था। अबू सुफ़ियान कहने लगा: "हे ख़ुदा के रसूल! मेरे दूसरे पुत्र मुआविया को भी आप कुछ दें।" आपने उसके लिए भी चालीस औकिया चाँदी और सौ ऊँट देने का आदेश दिया। इस पर अबू सुफ़ियान कहने लगा: "मेरे माता-पिता आप पर न्योछावर। आप उदार हैं। मैंने आपसे युद्ध किए हैं और आप क्या ही अच्छे योद्धा हैं। फिर मैंने आपसे सन्धि की और आप क्या ही अच्छे सन्धि करने वाले हैं। ख़ुदा आपको शुभ प्रतिफल दे।"

(शरह ज़रक़ानी अला मवाहिबुल् दुनिया, भाग 4, पृष्ठ 19–18, दारुल कुतुब इल्मिया, बैरूत, 1996 ई०)(सब्लुल् हुदा वल् इरशाद, भाग 5, पृष्ठ 396, दारुल कुतुब इल्मिया, बैरूत, 1993 ई०)
(दायरा-ए-मआरिफ़, भाग 9, पृष्ठ 289, बज़्म-ए-इक़बाल, लाहौर)(ग़ज़वा-ए-हुनैन, लेखक बाशमील, पृष्ठ 274–273 ,217, नफ़ीस अकैडमी)

मक्का के सम्मानित लोगों और कुलीनों में से एक हकीम बिन हिज़ाम भी थे। मक्का की विजय के अवसर पर उन्होंने इस्लाम स्वीकार किया और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने यह घोषणा की थी कि जो हकीम बिन हिज़ाम के घर में प्रवेश कर जाएगा, उसे सुरक्षा दी जाएगी। ये हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा के भाई के पुत्र थे। उन्हें भी आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने सौ ऊँट प्रदान किए। वे स्वयं वर्णन करते हैं कि "मैंने सौ और माँगे तो आपने वह भी मुझे प्रदान किए। मैंने अतिरिक्त सौ माँगे तो आपने मुझे अतिरिक्त सौ ऊँट प्रदान किए।" फिर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने कहा: "हे हकीम! यह धन अच्छा और मधुर है। अच्छा धन है। जो इसे मन की अनिच्छा (निस्पृहता) से लेगा, उसमें आशीर्वाद होगा और जो इसे मन की लालसा और लोभ से लेगा, उसमें आशीर्वाद नहीं होगा। वह उस व्यक्ति के समान है जो खाता है किन्तु तृप्त नहीं होता। ऊपर वाला हाथ अर्थात देने वाला हाथ, नीचे वाले हाथ अर्थात लेने वाले हाथ से श्रेष्ठ होता है।"

आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की सलाह का ऐसा प्रभाव हुआ कि उसी समय निवेदन किया: "हे ख़ुदा के रसूल! उसकी शपथ! जिसने आपको सत्य के साथ भेजा है, आज के बाद मरते दम तक मैं कभी किसी से कुछ नहीं माँगूंगा।" और कुछ परम्पराओं के अनुसार उन्होंने वे दो सौ ऊँट जिनका उन्होंने अनुरोध किया था, वे भी वापस कर दिए और फिर जीवन भर अपने इस वचन पर डटे रहे और किसी से कुछ नहीं माँगा, बल्कि इस सीमा तक उस पर अटल रहे कि हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु अपने शासनकाल में जब कोई धन देते तो ये लेने से मना कर देते। फिर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने भी अपने शासनकाल में धन देने के लिए बुलाया। इस्लामी विजयों के परिणामस्वरूप बहुत से धन आया करते थे तो ख़लीफ़ा सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम को उपहार के रूप में उनमें से दिया करते थे, लेकिन हज़रत हकीम बिन हिज़ाम रज़ियल्लाहु अन्हु ने लेने से मना कर दिया। इस पर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने सभी उपस्थित लोगों से सम्बोधित होकर कहा: "लोगो! साक्षी रहना। मैंने उनका अधिकार उन्हें दिया था, लेकिन उन्होंने लेने से मना कर दिया।"

(दायरा-ए-मआरिफ़ सीरत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम, भाग 9, पृष्ठ 304–303, बज़्म-ए-इक़बाल, लाहौर)(अस्सीरतुल हलबिय्यह, भाग 3, पृष्ठ 170, दारुल कुतुब इल्मिया, 2002 ई०)(अस्साबह, भाग 2, पृष्ठ 97, दारुल कुतुब इल्मिया, बैरूत, 1995 ई०)

आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की दानशीलता और उपहार से लाभान्वित होने वालों में से एक मक्का का एक नेता सफ़वान बिन उमय्या भी था। यह वही सफ़वान था जिससे आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने हुनैन के युद्ध के लिए कवच और शस्त्र उधार लिए थे और यह मूर्तिपूजक होने की अवस्था में ही हुनैन के युद्ध में भी सम्मिलित हुआ था।

(ग़ज़वा-ए-हुनैन, लेखक बाशमील, पृष्ठ 273, नफ़ीस अकैडमी)(सब्लुल् हुदा वल् इरशाद, भाग 5, पृष्ठ 316, दारुल कुतुब इल्मिया, 1993 ई०)(दायरा-ए-मआरिफ़ सीरत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम, भाग 9, पृष्ठ 236, बज़्म-ए-इक़बाल, लाहौर)

कुछ परम्पराओं के अनुसार सफ़वान मन में यह सोचकर आया था कि काश! हमें मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को मारने का अवसर मिल जाए या विरोधी शत्रु मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की सेना को पराजित दे दें।

(सब्लुल् हुदा वल् इरशाद, खंड 5, पृष्ठ 321, दारुल कुतुब-उल-इल्मिया, 1993 ई.)

लेकिन उसी युद्ध में ही उसके मन का परिवर्तन होने लगा और जब लूट के माल के बंटवारे का समय आया तो आपने उसको सौ ऊँट प्रदान किए, बल्कि सहीह मुस्लिम की परम्परा के अनुसार तीन सौ ऊँट प्रदान किए। एक और परम्परा है कि उन्हीं दिनों में पैगम्बर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम एक घाटी से गुज़रे जिसमें लूट के माल के ऊँट और बकरियाँ थीं और वह घाटी उन ऊँटों और बकरियों से भरी हुई थी। सफ़वान इतना धन देखकर आश्चर्यचकित होकर देखने लगा, तो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने कहा: "हे अबू वहब!" (यह सफ़वान की उपाधि थी) "क्या इस घाटी ने तुझे आश्चर्य में डाल दिया है?" उसने कहा: "जी हाँ।" आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने कहा: "यह सारा धन तुम्हारा हुआ। तुम ले लो।" सफ़वान ने सहज में कहा कि "मैं साक्ष्य देता हूँ कि आप ख़ुदा के पैगम्बर हैं, क्योंकि इस प्रकार का उपहार कोई पैगम्बर ही कर सकता है।" एक दूसरी परम्परा के अनुसार सफ़वान बिन उमय्या स्वयं वर्णन करते हैं कि "आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम निरन्तर मुझे हुनैन की लूट का माल देते रहे, जिसका परिणाम यह हुआ कि पहले आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम मुझे

सारी सृष्टि से अधिक अप्रिय व्यक्तित्व थे, फिर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम मुझे सारी सृष्टि से अधिक प्रिय हो गए।" संक्षेप में, आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम विभिन्न अरब नेताओं को उपहार देते रहे। इन सब की संख्या पचास से अधिक बताई गई है।

(सहीह मुस्लिम, किताबुल फ़ज़ाइल, "बाब फ़ी सख़ाअतिहि", रिवायत संख्या 2313)(शरह ज़रक़ानी अला मवाहिबुल् दुनिया, भाग 4, पृष्ठ 21, दारुल कुतुब इल्मिया, 1996 ई०)(सब्लुल् हुदा वल् इरशाद, भाग 5, पृष्ठ 396, दारुल कुतुब इल्मिया, 1993 ई०)

इसके बाद आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने हज़रत ज़ैद बिन साबित रज़ियल्लाहु अन्हु को शेष लोगों को बुलाने का आदेश दिया और उनमें लूट का माल बाँटा। प्रत्येक के भाग में चार ऊँट या चालीस बकरियाँ आईं और इस प्रकार आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने वह लूट का माल, जो अब तक का सबसे अधिक धन था, सारा का सारा लोगों में बाँट दिया।

(शरह ज़रक़ानी अला मवाहिबुल् दुनिया, भाग 4, पृष्ठ 27, दारुल कुतुब इल्मिया, 1996 ई०) (ग़ज़वा-ए-हुनैन, लेखक बाशमील, पृष्ठ 270, नफ़ीस अकैडमी)(दायरा-ए-मआरिफ़ सीरत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम, भाग 9, पृष्ठ 323 ,289, बज़्म-ए-इक़बाल, लाहौर)

आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के चरित्र का यह पहलू विचारणीय है कि विरोधी आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम और आपके युद्धों के विषय में यह आरोप लगाते हैं कि मुसलमान चूँकि निर्धन और धन-सम्पदा से वंचित थे, इसलिए युद्ध आरम्भ किए गए। यदि इस बात में थोड़ी सी भी सत्यता होती तो हुनैन के युद्ध की लूट के माल का बंटवारा कुछ और ढंग से होता, लेकिन यहाँ तो हम देखते हैं कि लूट के माल का एक बड़ा भाग हृदयों को मिलाने के लिए अन्य लोगों को दिया गया।

(उद्धारित सीरतुन नबी, लेखक शिब्ली नोमानी, भाग 1, पृष्ठ 396, भाग 4, पृष्ठ 247, मक्तबा इस्लामिय्यह, 2012 ई०)

कुरैश के नेताओं को दिया गया, बल्कि कुछ परम्पराओं के अनुसार तो सारा का सारा माल दूसरे लोगों में बाँट दिया गया था। हालाँकि इसमें कारण कुछ भी हों, लेकिन यह तो संसार ने देख लिया कि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने अपने लिए कुछ भी नहीं रखा, बल्कि कुछ परम्पराओं के अनुसार, जिसका विवरण आगे आएगा, कि अपने प्राण न्योछावर करने वाले और वफादार साथियों अर्थात मदीना के सहायकों (अंसार) को भी इस लूट के माल में से कुछ नहीं दिया। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने क़ुरैश को धन-सम्पदा देने का एक कारण बताते हुए कहा: "मैं क़ुरैश को देकर उनके हृदय को मिलाने का प्रबन्ध कर रहा हूँ, क्योंकि उन्होंने अज्ञानता के युग (जाहिलिय्यह) को अभी हाल ही में छोड़ा है, उनका विश्वास अभी इतना दृढ़ नहीं हुआ है।"

(सहीह बुख़ारी, किताब फ़र्ज़ुल ख़ुमुस, "बाब मा कान अन-नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम यु'ती अल-मुअल्लफ़ति क़ुलूबुहुम...", हदीस 3146)

बुख़ारी की एक और परम्परा है कि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने कहा: "निश्चय ही क़ुरैश के अज्ञानता और विनाश की विपत्ति का समय हाल ही का है। मेरा उद्देश्य उनकी क्षति की पूर्ति और उनकी खुशामद करना है।" (सहीह बुख़ारी, पुस्तक युद्ध, अध्याय: ताइफ का युद्ध, 4334) और फिर इस पर बुद्धिमत्तापूर्ण बंटवारे और उपहारों के ऐसे आशीर्वादपूर्ण प्रभाव सामने आए कि वे जो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के रक्त के प्यासे थे, अब उनके लिए संसार भर में सबसे अधिक श्रेष्ठ और प्रिय आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ही हो गए। वे जो पहले इस्लाम को समाप्त करने के लिए प्राणों की बाजी लगाने वाले थे, अब इस्लाम की और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की रक्षा के लिए अपने प्राण अर्पण करने को तैयार हो गए और उनमें से अनेक वे थे जो बाद में इस्लामी युद्धों में शहादत के स्थान पर विराजमान हुए और उन सब का इस्लाम उत्तम इस्लाम सिद्ध हुआ।

(सहीह बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, "बाब ग़ज़वत अत-ताइफ़", हदीस 4334)(दायरा-ए-मआरिफ़ सीरत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम, भाग 9, पृष्ठ 299–298, बज़्म-ए-इक़बाल, लाहौर)

इस अवसर पर कुछ पाखंडियों ने धन के बंटवारे में आपत्ति करते हुए अशिष्टता और धृष्टता का प्रदर्शन भी किया और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पर यह आरोप लगाया कि खुदा की शरण! मानो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने न्याय और इंसाफ से काम नहीं लिया और न ही खुदा की प्रसन्नता के अनुसार काम किया है। खुदा के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने जब यह सुना तो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का पवित्र मुखमण्डल लाल हो गया और कहा: "यदि खुदा और उसका रसूल भी न्याय से काम नहीं लेगा तो कौन है जो न्याय और इंसाफ करेगा?"

फिर आपने कहा कि "खुदा मेरे भाई मूसा पर दया करे, उन्हें इससे भी बड़ी-बड़ी कठिनाइयाँ और यातनाएँ पहुँचाई गईं और उन्होंने धैर्य से काम लिया।" इसी प्रकार एक अन्य व्यक्ति जिसका नाम ज़ुल-ख़ुवैसिरा था, आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पास खड़ा हुआ और कहने लगा कि "हे मुहम्मद! आपने जो आज किया है, वह मैंने देखा है।" आपने कहा: "अच्छा, क्या देखा है?" कहने लगा: "आपने इंसाफ से काम नहीं लिया।" आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने कहा: "तेरा बुरा हो! यदि मेरे पास न्याय नहीं तो किसके पास है?" इस पर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत खालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हु खड़े हुए और निवेदन किया: "यदि अनुमति हो तो उसकी गर्दन उड़ा दी जाए।" आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने कहा: "नहीं। सम्भव है यह व्यक्ति नमाज़ पढ़ता हो। अब यह भी कोई निश्चित बात नहीं, लेकिन इसी शक पर कि सम्भव है यह नमाज़ पढ़ता हो, इसलिए मैं कैसे कह सकता हूँ कि उसकी गर्दन उड़ाओ। आजकल के मुसलमानों के कर्म देखें क्या हैं।" इस पर हज़रत खालिद रज़ियल्लाहु अन्हु ने निवेदन किया: "क्या कोई नमाज़ी ऐसी बात कह सकता है जो उसके हृदय में न हो?" आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने कहा: "हे खालिद! मुझे यह आदेश नहीं दिया गया कि मैं लोगों के हृदय चीरकर या सीने फाड़कर देखूं।"

आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने यह भी कहा कि "यह व्यक्ति और इसके साथी कुरआन पढ़ेंगे और वह उनके गले से नीचे नहीं उतरेगा। विश्वास उनका ऊपरी विश्वास है और यह धर्म से इस प्रकार निकल जाएंगे जैसे तीर शिकार से इस प्रकार आर-पार हो जाता है कि तीर पर रक्त का जरा सा भी चिह्न नहीं होता। तुम उनकी नमाज़ और रोज़े के मुकाबले में अपनी नमाज़ और रोज़े को तुच्छ जानोगे।" अर्थात वे बाह्य रूप से लम्बी-लम्बी और नियमित नमाज़ पढ़ने वाले होंगे और रोज़ा रखने में भी कठोर होंगे।

(सब्लुल् हुदा वल् इरशाद, भाग 5, पृष्ठ 405–404, दारुल कुतुब इल्मिया, बैरूत, 1993 ई०) (अस्सीरतुल हलबिय्यह, भाग 3, पृष्ठ 174–173, दारुल कुतुब इल्मिया, बैरूत, 2002 ई०)

बहुत से मुसलमानों के कर्म और विशेष रूप से विद्वान कहलाने वालों के कर्म आजकल हम देखते हैं कि यही हो रहे हैं। इसकी पहले ही आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने भविष्यवाणी की थी। टीकाकार बताते हैं कि यही व्यक्ति ख़वारिज (विद्रोहियों) के फितने के संस्थापकों में से हुआ और हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु के समय में यह दल सामने आया और फिर हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने उनके विरुद्ध जिहाद किया और पैगम्बर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने जिस-जिस प्रकार उन लोगों के विषय में बताया था, ठीक वैसे ही वे उसी प्रकार के निकले।

(उद्धारित उम्दतुल क़ारी, भाग 15, पृष्ठ 345, दार इहया उत-तरास, 2003 ई०)(इर्शादुस्सारी लिशरह सहीह बुख़ारी, भाग 6, पृष्ठ 159, दारुलफिक्र, 2010 ई०)

हज़रत मसीह-मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि "ज़ुल-ख़ुवैसिरा नामक एक व्यक्ति खुदा के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पास आया और उसने कहा: 'हे मुहम्मद! (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) जो कुछ आपने आज किया है, वह मैंने देखा है।' आपने कहा: 'तुमने क्या देखा है?' उसने कहा: 'मैंने यह देखा है कि आपने आज अत्याचार किया है और इंसाफ से काम नहीं लिया।' (खुदा की शरण!) आपने कहा: 'तुम पर अफसोस! यदि मैंने न्याय नहीं किया तो फिर और कौन मनुष्य संसार में न्याय करेगा।' उस समय सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम जोश में खड़े हो गए और जब यह व्यक्ति मस्जिद से उठकर गया तो उनमें से कुछ ने कहा: 'हे खुदा के रसूल! यह व्यक्ति मार डाले जाने के योग्य है। क्या आप अनुमति देते हैं कि हम उसे मार डालें?' (आज पैगम्बर का अपमान करने के बारे में बड़ी बातें करते हैं, तो यहाँ भी देख लें।) आपने कहा: 'यदि यह व्यक्ति कानून का पालन करता है तो हम उसे कैसे मार सकते हैं।' अर्थात जो हमारे नियम-कानून हैं, उनका पालन कर रहा है तो ठीक है, मारने की कोई आवश्यकता नहीं। सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम ने कहा: 'हे खुदा के रसूल! एक व्यक्ति बाहर से कुछ और करता है और उसके हृदय में कुछ और होता है। क्या ऐसा व्यक्ति दंड का पात्र नहीं है?' खुदा के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने कहा: 'मुझे खुदा ने यह आदेश नहीं दिया कि मैं लोगों से उनके हृदयों के विचारों के अनुसार व्यवहार करूं। मुझे तो यह आदेश दिया गया है कि मैं लोगों से उनके बाह्य कर्म के अनुसार व्यवहार करूं।' फिर आपने कहा: 'यह और इसके साथी एक दिन इस्लाम से विद्रोह करेंगे।' हाँ, यह मैं बता दूँ कि मैं अब तो कुछ नहीं दंड दे रहा, लेकिन विद्रोह करेंगे तो फिर वह दंड भी पाएंगे।" अतः हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु के समय में यह व्यक्ति और इसके कबीले के लोग उन विद्रोहियों के नेता थे जिन्होंने हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु से विद्रोह किया और ख़वारिज के नाम से आज तक प्रसिद्ध हैं।

(दीबाचा तफ़सीरुल क़ुरआन, अनवारुल उलूम, भाग 20, पृष्ठ 358)

शेष, यदि खुदा ने चाहा तो अगली बार

(अल-फ़ज़्ल इंटरनेशनल, 10 अक्तूबर 2025, पृष्ठ 2 से 7) ★ ★ ★

पृष्ठ 1 का शेष

पर विश्वास न रहे तो न केवल संपूर्ण ब्रह्मांड की रचना को एक व्यर्थ और निरर्थक चीज़ मानना पड़ता है, बल्कि नेकी और परहेज़गारी में प्रगति भी एक बेकार कर्म ठहरती है। परन्तु यह विचार कि अल्लाह तआला ने सूरज और चाँद और तारों और ग्रहों और आसमान और ज़मीन के बीच की हज़ारों चीज़ें पैदा करके और उनमें अपनी शक्ति के हज़ारों रहस्य निहित करके एक ऐसे मनुष्य को पैदा किया जिसने कुछ वर्षों का जीवन व्यतीत करके सदैव के लिए नष्ट हो जाना है और उसकी ज़िंदगी का कोई महत्वपूर्ण लक्ष्य नहीं है, एक ऐसा विचार है जिसे कोई भी बुद्धिमत्ता स्वीकार नहीं कर सकती। मनुष्य के लिए इतने विशाल ब्रह्मांड का सृजन करना और उस पर बुद्धि के माध्यम से मनुष्य को शासन प्रदान करना, यह बताता है कि उसके लिए इस सीमित जीवन के अतिरिक्त कोई और लक्ष्य भी निर्धारित किया गया है। और इस्लाम कहता है कि वह लक्ष्य यही है कि उसे एक शाश्वत जीवन के लिए पैदा किया गया है और शाश्वत आध्यात्मिक प्रगतियों का मार्ग उसके लिए खोला गया है। अतः मृत्यु के केवल इतने ही अर्थ हैं कि मानव आत्मा शरीर से अलग हो गई, अन्यथा आत्मा पर कोई नाश नहीं है और वह सदैव जीवित रहती है और अल्लाह तआला की निकटता के अनंत स्तर प्राप्त करती रहती है।

बहरहाल, अंबिया (पैग़म्बरों) के इन्कार का एक बड़ा कारण मृत्यु के पश्चात पुनरुत्थान का इन्कार भी होता है, जिसकी ओर इन आयतों में संकेत किया गया है।

(तफ़सीर-ए-कबीर, भाग 6, पृष्ठ 171, प्रकाशन क़ादियान 2010)

★ ★ ★

पृष्ठ 12 का शेष

का मिशन पंजीकृत हुआ और औपचारिक रूप से प्रचार की अनुमति मिल गई। और फिर उसके बाद अधिक प्रचारक भी स्पेन भेजे गए।

एक लंबे और उथल-पुथल भरे दौर के बाद 9 अक्टूबर 1980 ई. को वह शुभ घड़ी आई जब स्पेन में लगभग 750 साल के बाद पहली मस्जिद 'मस्जिद बशारत' की आधारशिला पेदरोआबाद स्थान पर हज़रत खलीफा मसीह सालिस रहमहुल्लाह तआला ने रखी। मस्जिद का निर्माण दो साल की अवधि में पूरा हुआ। 10 सितंबर 1982 ई. का दिन भी स्पेन के इतिहास में एक स्मरणीय महत्व का है जब हज़रत खलीफा मसीह राबे रहमहुल्लाह तआला ने अपने स्पेन दौरे के दौरान मस्जिद बशारत का उद्घाटन किया।

ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने अपने स्पेन दौरे के दौरान 8 जनवरी 2005 ई. को वार्षिक सम्मेलन स्पेन के समापन सत्र में अपने भाषण में कहा:

'जिन लोगों ने स्पेन पर सात सौ साल महान शासन किया उनके साथ तो अल्लाह तआला का कोई वादा नहीं था। उन्होंने जब ख़ुदाई आदेशों से मुंह मोड़ा तो उनकी वह महान सरकारें भी समाप्त हो गईं जिनकी महानता और शान की गवाही आज उनके जमाने की मस्जिदें और महल देते हैं। लेकिन आपके साथ तो अल्लाह तआला का वादा है कि आपको हमेशा के लिए विजयी होना है और यह विजय हमें दिलों को जीतकर प्राप्त करनी है। इसलिए अपनी जिम्मेदारियों को समझें और सत्य के संदेश को पहुंचाने के लिए तैयार हो जाएं।'

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने कुरतुबा शहर का उल्लेख करते हुए कहा कि: 'इस शहर और इसके आसपास बसे लोगों को प्रचार करें। ये अरबों की ही नस्लें हैं। उन्हें सत्य का संदेश पहुंचाएं और उनके पूर्वजों के बारे में बताएं कि वे मुसलमान थे और जबरदस्ती ईसाई बनाए गए।'

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने मस्जिद बशारत का उल्लेख करते हुए कहा: 'इसलिए अब यह जगह और यह मस्जिद बहुत महत्वपूर्ण है और अब इंशा अल्लाह इसी जगह से स्पेन में इस्लाम का प्रकाश फैलेगा। इस जगह को अब हमेशा के लिए एक केंद्रीय महत्व प्राप्त रहेगा।'

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने माननीय मौलाना करम इलाही ज़फर साहिब (स्वर्गवासी) का स्मरण भी किया कि किस तरह उन्होंने अपना पूरा जीवन स्पेन में इस्लाम की सेवा में बिता दिया। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने कहा: 'वे तो शहीद हैं। उनका उदाहरण आपके सामने मौजूद है इसलिए अब आप सभी प्रचार की ओर ध्यान दें और इस कर्तव्य की पूर्ण रूप से पूर्ति का सौभाग्य प्राप्त करें।'

माननीय मौलाना करम इलाही ज़फर साहिब का निधन 12 अगस्त 1996 ई. को गिरनाटा में हुआ। आपको पेदरोआबाद के ईसाई चर्च के कब्रिस्तान में दफ़नाया गया।

स्पेन की धरती पर माननीय करम इलाही ज़फर साहिब (स्वर्गवासी) के माध्यम से अहमदिया मुस्लिम जमाअत की स्थापना का औपचारिक आरंभ 1946 ई. में हुआ था। जब वे आए थे तो अकेले थे। आज अल्लाह तआला के अनुग्रह से स्पेन के निम्नलिखित स्थानों पर औपचारिक जमाअतें स्थापित हैं और कुछ स्थानों पर अहमदी बसे हुए हैं। पेदरोआबाद, मैड्रिड, बार्सिलोना (Barcelona), वालेंसिया (Valencia), गिरनाटा (Granada), Zaragoza, Leon, Zafra, Don Benijo, Bandajoz, Alcaceres, Tortosa, Javea, Xativa, Navalcarnero.

अब यह धरती इस्लाम के पुनरुत्थान के लिए, अल्लाह तआला के अनुग्रह से तैयार होना शुरू हो चुकी है। 29 मार्च 2013 ई., शुक्रवार के पावन दिन, जब हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ वालेंसिया स्थान पर दूसरी मस्जिद 'मस्जिद बैत-उर-रहमान' का उद्घाटन करेंगे तो दुनिया एक बार फिर सदियों के बाद इस धरती पर 'वा अशरकतिल अर्दु बिनूरि रब्बिहा' (और धरती अपने पालनहार के प्रकाश से जगमगा उठी) के सुंदर और आत्मा को तृप्त करने वाले दृश्य को देखेगी। इंशा अल्लाहुल अज़ीज़ (परमात्मा ने चाहा तो)।

मस्जिद बैत-उर-रहमान से संबंधित अखबारों में खबरें

यहां के इलेक्ट्रॉनिक और प्रिंट मीडिया ने मस्जिद के निर्माण और उसके उद्घाटन के संबंध में खबरें दी हैं।

बालेंसिया के अखबार रोज़नामा "Levante" ने अपने 23 मार्च 2013 ई. के अंक में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की तस्वीर छापते हुए मस्जिद के उद्घाटन के संबंध में खबर दी और मस्जिद बैत-उर-रहमान के बाहरी हिस्से की तस्वीर भी छापी।

अखबार ने लिखा: 'अहमदिया जमाअत एक मस्जिद जो गांव से कुछ दूर है।'

'मुसलमानों की एक जमाअत शुक्रवार के दिन अपनी मस्जिद का उद्घाटन कर रही है।'

'सुधारवादी और शांति का प्रचार करने वाली जमाअत, अहमदिया जमाअत के अध्यक्ष का कहना है यह एक संयोग है कि हमारी मस्जिद का उद्घाटन शुक्रवार के पावन दिन हो रहा है।'

इस पूरी खबर में एक तरह का संयोग और एक दिलचस्पी का तत्व पाया जाता है। बात यह है कि अहमदिया जमाअत जिसकी संख्या पूरी दुनिया में दो सौ मिलियन है, स्पेन के एक स्थान La Pobla de Vallbona में अपनी दूसरी मस्जिद का उद्घाटन कर रही है। याद रहे कि इस जमाअत की पहली मस्जिद कुरतुबा के निकट स्थित है। दिलचस्प बात यह है कि यह जमाअत जो कि शांतिप्रियता, साहस और अशांति के विरोध के कारण प्रसिद्ध है, यह मानती है कि मुहम्मद (उन पर अल्लाह की दया और शांति हो) के बाद एक और पैगंबर का आगमन हो चुका है जिनका नाम हज़रत अहमद था। वह 1835 ई. में भारत के एक गांव में पैदा हुए। अहमदी उन्हें मसीह-ए-मौऊद मानते हैं और उनके एक आध्यात्मिक नेता भी हैं यानी खलीफा। मेरा मतलब हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब से है। संयोग तो यह है कि इस मस्जिद का उद्घाटन जो पांच हज़ार वर्ग मीटर में फैला है, शुक्रवार के पावन दिन हो रहा है जो ईसाई मान्यताओं के अनुसार हज़रत ईसा की मृत्यु का दिन है। चूंकि मुसलमानों के निकट शुक्रवार का दिन पवित्र है इसलिए मस्जिद का उद्घाटन इस शुभ दिन को हो रहा है।'

डॉक्टर अता इलाही मंसूर (अध्यक्ष जमाअत बालेंसिया) Lluis Alcanyis de Xativa नामक उपनगर के एक अस्पताल में सर्जन हैं। मस्जिद का उद्घाटन आगामी शुक्रवार को दोपहर दो बजे होगा। आम जनता के लिए एक कार्यक्रम 3 मार्च, बुधवार की शाम साढ़े पांच बजे आयोजित किया जाएगा। जमाअत के आध्यात्मिक नेता सभी कार्यक्रमों में भाग लेंगे। स्पेन में यह जमाअत बहुत ही छोटी है। इसकी संख्या छह सौ के लगभग है। अब नई मस्जिद बन जाने से उन्हें आशा है कि उनकी जमाअत को प्रगति प्राप्त होगी।

अहमदिया जमाअत के धार्मिक नेता इस शुभ समारोह को आशीर्वाद देंगे जो उनके लिए वही महत्व रखते हैं जो ईसाइयों के लिए पोप का है।

डॉक्टर अता इलाही मंसूर साहिब ने कहा कि: पेदरोआबाद में जो हमारी मस्जिद है उसमें लोग शाम के समय बगीचे में आकर आनंद लेते थे। यहां भी हम यह चाहते हैं कि लोग इस मस्जिद को अपने गांव की एक सामुदायिक जगह समझें और यह समझें कि इस्लाम की जो नकारात्मक छवि उन्हें देखने को मिली है उसका कुरआन करीम से दूर का भी संबंध नहीं है।

आपने अधिक बताया कि यह मस्जिद सिर्फ जमाअत के चंदे से बनाई गई है न कि किसी सरकार या किसी संगठन की सहायता से। यह सर्जन Llosa de ranes के निवासी हैं और मुसलमानों पर होने वाले अत्याचार उन्हें अभी तक याद आते हैं। और उनकी हार्दिक इच्छा है कि कभी बालेंसिया में मुसलमानों को फिर से खोई हुई प्रतिष्ठा और महानता प्राप्त हो।'

मस्जिद के उद्घाटन के संबंध में वेबसाइट पर एक खबर

26 मार्च 2013 ई. को टेलीविज़न Levante के एक प्रतिनिधि ने माननीय डॉक्टर मंसूर अता इलाही साहिब, अध्यक्ष जमाअत बालेंसिया का साक्षात्कार लिया जो उन्होंने अपनी वेबसाइट http://www.lasprovincias.es पर प्रकाशित किया। साक्षात्कार की अवधि 4 मिनट थी।

माननीय डॉक्टर साहिब ने मस्जिदों के निर्माण के उद्देश्य बताते हुए कहा कि मस्जिद किसी व्यक्ति की या किसी जमाअत की निजी संपत्ति नहीं होती बल्कि यह अल्लाह का घर होता है और हम चाहते हैं कि बालेंसिया और स्पेन के निवासी हमें जानें। साथ ही आपने बताया कि जमाअत को कुछ देशों में कट्टरपंथ का सामना है लेकिन वे लोग इस्लाम पर अमल नहीं कर रहे बल्कि इस्लाम की शांतिपूर्ण शिक्षा से कोसों दूर हैं।

(शेष)...

★ ★ ★

क़ुरआन-ए-करीम में हूरों का जो ज़िक्र है, ग़ैर अज़ जमाअत लोग उसका ग़लत मतलब निकालते हैं। इन हूरों से अस्ल में क्या मुराद है? इसी तरह उन्होंने पूछा कि शादी के बाद औरत के लिए खाविन्द का नाम अपनाना ज़रूरी है?
अल्लाह तआला की ज़ात को किसने बनाया?
हमजिंसपरस्ती को कैसे गलत साबित किया जाए?
क्या मकरूह वक़्त में नमाज़-ए-जनाज़ा अदा की जा सकती है और क्या एक मस्जिद में दो जुमे हो सकते हैं?
नमाज़ में जह्र (ऊंची आवाज़ में) 'बिस्मिल्लाह' पढ़ने के बारे में रहनुमाई।

सय्यदना हज़रत अमीरुल मौमेनीन ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ से पूछे जाने वाले अहम प्रश्नों के उत्तर (क़िस्त 50-51)

लन्दन से एक महिला ने हज़रत खलीफ़तुल मसीह सालिस रहमहुल्लाह के एक जुमे के खुत्बे में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की भविष्यवाणी की रोशनी में तीसरे विश्व युद्ध के बारे में दी गई चेतावनी के हवाले से इस युद्ध के बारे में और सबूत पूछे। साथ ही लिखा कि जमाअत के अलावा दूसरे लोग जिन्न और भूतों पर यकीन रखते हैं, उन्हें जिन्नों की हकीकत कैसे समझाई जा सकती है? हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने अपने मकतूब तिथि 17 दिसम्बर 2021 में इन सवालों के निम्नलिखित जवाब अता फ़रमाए। हज़ूर अनवर ने फ़रमाया:

उत्तर: अल्लाह तआला ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को विभिन्न स्वप्नों व कुशूफ़ और इलहामात के द्वारा दुनिया पर आने वाली जिन बड़ी-बड़ी आफ़तों और ज़लज़लों की ख़बर दी है उनमें पांच भयावय तबाहियों का ख़ास तौर पर ज़िक्र है। इसलिए हज़ूर अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं: पांच ज़लज़लों के आने की निस्बत खुदा तआला की भविष्यवाणी जिसके अलफ़ाज़ ये हैं 'चमक दिखलाऊंगा तुम को इस निशान की पंज बार'। इस वही इलाही का ये मतलब है कि खुदा फ़रमाता है कि महज़ इस आजिज़ की सचाई पर गवाही देने के लिए और महज़ इस ग़रज़ से कि ता लोग समझ लें कि मैं उसकी तरफ से हूं पांच दहशतनाक ज़लज़ले एक दूसरे के बाद कुछ-कुछ फ़ासिले से आएंगे ता वह मेरी सचाई की गवाही दें और हर एक में उनमें से एक ऐसी चमक होगी कि उसके देखने से खुदा याद आ जाएगा और दिलों पर एक उनका एक खौफनाक असर पड़ेगा और वह अपनी क़ुव्वत और शिद्दत और नुक्सान रसानी में ग़ैर मामूली होंगे जिनके देखने से इंसानों के होश जाते रहेंगे।

(तजल्लियात इलाहिया, रूहानी ख़ज़ायन भाग 20 पृष्ठ 395)

इन आफ़तों की हौलनाकी और शिद्दत बयान करते हुए हज़ूर अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं: याद रहे कि खुदा ने मुझे आम तौर पर ज़लज़लों की ख़बर दी है पस यक़ीनन समझो कि जैसा कि भविष्यवाणी के मुताबिक़ अमरीका में ज़लज़ले आए ऐसा ही यूरोप में भी आए और नेज़ एशिया के मुख़्तलिफ़ मकामात में आएंगे और बाज़ उनमें क़यामत का नमूना होंगे और इस क़दर मौत होगी कि ख़ून की नहरें चलेंगी। इस मौत से परिन्द चरिन्द भी बाहर नहीं होंगे और ज़मीन पर इस क़दर सख़्त तबाही आएगी कि उस रोज़ से कि इंसान पैदा हुआ ऐसी तबाही कभी नहीं आई होगी और अक्सर मकामात ज़ेरोज़बर हो जाएंगे कि गोया उनमें कभी आबादी न थी और उसके साथ और भी आफ़तें ज़मीन और आसमान में हौलनाक सूरत में पैदा होंगी ... क्या तुम ख़्याल करते हो कि तुम इन ज़लज़लों से अमन में रहोगे या तुम अपनी तदबीरों से अपने तईं बचा सकते हो? हरगिज़ नहीं। इंसानी कामों का उस दिन ख़ातमा होगा ये मत ख़्याल करो कि अमरीका वग़ैरह में सख़्त ज़लज़ले आए और तुम्हारा मुल्क उनसे महफ़ूज़ है मैं तो देखता हूं कि शायद उनसे ज़्यादा मुसीबत का मुंह देखोगे। ऐ यूरोप तू भी अमन में नहीं और ऐ एशिया तू भी महफ़ूज़ नहीं। और ऐ जज़ाइर के रहने वालो! कोई मस्नूई खुदा तुम्हारी मदद नहीं करेगा। मैं शहरों को गिरते देखता हूं और आबादियों को वीरान पाता हूं।

(हक़ीक़तुल वह्यी, रूहानी ख़ज़ायन भाग 22 पृष्ठ 269,268)

इन इनज़ारी भविष्यवाणी में ज़लज़ला के अलफ़ाज़ से ये नहीं समझ लेना चाहिए कि ये आफ़तें सिर्फ ज़लज़ला की सूरत में ही दुनिया पर नाज़िल होंगी। बल्कि इनसे मुराद ज़लज़लों ही की तरह तबाही फैलाने वाली कोई और आफ़तें भी हो सकती हैं। इसलिए इस अम्र की वज़ाहत करते हुए हज़ूर अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं: खुदा तआला के कलाम में इस्तिआरात भी होते हैं जैसा कि अल्लाह तआला फ़रमाता है مَنْ كَانَ فِيْ هٰذِهٖٓ اَعْمٰى فَهُوَ فِي الْاٰخِرَةِ اَعْمٰى (बनी इसराईल 73) लिहाज़ा मुमकिन था कि ज़लज़ले से मुराद और कोई अज़ीमुश्शान आफ़त होती जो पूरे तौर पर ज़लज़ले का रंग अपने अन्दर रखती। मगर ज़ाहिर इबारत बह निस्बत तावील के ज़्यादा हक़ रखती है पस दरअस्ल इस भविष्यवाणी का हल्का वसीऐ था लेकिन खुदा तआला ने दुश्मनों का मुंह काला करने के लिए ज़ाहिर अलफ़ाज़ की रू से भी उसे पूरा कर दिया। और मुमकिन है कि बाद इसके बाज़ हिस्से इस भविष्यवाणी के किसी और रंग में भी ज़ाहिर हों लेकिन बहरहाल वह अम्र ख़ारिके आदत होगा जिसकी निस्बत ये भविष्यवाणी है... पस ये भविष्यवाणी बिला शुब्बा औल दर्जे की ख़ारिके आदत अम्र की ख़बर देती है। और मुमकिन है कि उसके बाद भी कुछ ऐसे हवादिस मुख़्तलिफ असबाबे तबीया से ज़ाहिर हों जो ऐसी तबाहियों के मूजिब हो जाएं जो ख़ारिके आदत हों पस अगर इस भविष्यवाणी के किसी हिस्से में ज़लज़ले का ज़िक्र भी न होता तब भी ये अज़ीमुश्शान निशान था क्योंकि मक़सूद तो इस भविष्यवाणी में एक ख़ारिके आदत तबाही मकानों और जगहों की है जो बेमिस्ल है ज़लज़ले से हो या किसी और वजह से।

(ज़मीमा बराहीन-ए-अहमदिया हिस्सा पंजम, रूहानी ख़ज़ायन जिल्द 21 पृष्ठ 161)

अल्लाह तआला की तरफ से हज़ूर अलैहिस्सलाम को बताई जाने वाली इन ग़ैब की ख़बरों के ऐन मुताबिक़ दुनिया दो आलमी जंगों, ताऊन की वबा और दुनिया के अक्सर हिस्सों में आने वाले ग़ैर मामूली ज़लज़लों की सूरत में चार निशानों के पूरा होने का एक मर्तबा मुशाहदा कर चुकी है, जिनमें इंसानी और हैवानी जानों, चरिन्द परिन्द और इमारतों का ग़ैर मामूली नुक्सान हुआ। अल्लाह तआला ने हज़ूर अलैहिस्सलाम को ख़ास तौर पर पांच निशानों के ज़ाहिर होने की ख़बर दी थी। अल्लाह बेहतर जानता है कि पांचवां निशान किस सूरत में ज़ाहिर होता है, किसी ग़ैर मामूली ज़लज़ले की शक्ल में या किसी आलमी वबा की सूरत में या तीसरी आलमी जंग के तौर पर दुनिया पर तबाही लेकर आता है। लेकिन ये अम्र रोज़ रोशन की तरह वाजेह है कि अगर दुनिया ने अक़्ल न की और अपने पैदा करने वाले की तरफ रुजूअ न किया तो जिस तरह पहले चार निशान पूरे हुए हैं, ये पांचवां निशान भी पूरा होगा और उसके बाद जैसा कि इन भविष्यवाणी के साथ अल्लाह तआला का वादा है कि इस्लाम को इन-शाअल्लाह ग़ैर मामूली ग़लबा नसीब होगा। इसी मज़मून को हज़रत खलीफ़तुल मसीह सâलिस रहमहुल्लाह ने अपने 1967 के दौरे यूरप के दौरान हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की मज़कूरह बाला भविष्यवाणी की रोशनी में बयान फ़रमाया था, जिसका आपने अपने ख़त में ज़िक्र किया है। इसलिए हज़ूर रहमहुल्लाह ने फ़रमाया:

हज़रत बानी सिलसिला अहमदिया ने इस्लाम की सदाक़त के सुबूत के तौर पर सैकड़ों बल्कि हज़ारों निशानात दुनिया के सामने पेश किए जिनमें से एक ये है कि आपने अल्लाह तआला से इत्तिला पा कर पांच अज़ीम तबाहियों के बारे में भविष्यवाणी फरमाई। दो पहली और दूसरी जंगे आज़ीम की सूरत में अज़ीमुश्शान तौर पर पूरी हुईं। तीसरी हौलनाक तबाही के मुहीब आसार आसमान पर हुवैदा हैं जिसके असरात निहायत ही खौफनाक और तबाह कुन होंगे। उसके साथ ही अल्लाह तआला ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को ये ख़बर भी दी कि इस तीसरी तबाही के साथ ग़लबाए इस्लाम का ज़माना भी वाबस्ता है।

इस तबाही से बचने का सिर्फ एक ही तरीक़ा है और वह ये कि इंसान सच्चे रास्ते को इख़्तियार करे और वह रास्ता इस्लाम है। अल्लाह तआला का क़हर अनकरीब इस दुनिया पर नाज़िल होने वाला है। तबाही की आग भड़क उठी है। आओ! और इस्तिग़फार के आंसुओं से इस आग के लपकते हुए शोलों को सर्द करो। आओ! और मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के रहमो करम के ठंडे साये तले पनाह हासिल कर लो। उठो और अल्लाह तआला के साथ एक ज़िन्दा ताअल्लुक़ क़ायम करो। आओ! अगर तुम इस भड़कती हुई आग के शोलों से अपने आप को महफ़ूज़ रखना चाहते हो।

(खुत्बा जुमा इरशाद फरमूदह 11 अगस्त 1967। खुतबात-ए- नासिर जिल्द औल पृष्ठ 808)

बाकी जहां तक जिन्नों और भूतों के तसव्वुर की बात है तो ग़ैर अज़ जमाअत लोगों में जिन्नों और भूतों के बारे में जो तसव्वुर पाया जाता है, क़ुरआन-ए-करीम और अहादीस नबविया सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से उसका कोई सुबूत नहीं मिलता।

अलबत्ता क़ुरआन-ए-करीम और अहादीस में जिन्न का लफ़्ज़ कसरत के साथ और मुख़्तलिफ मअनियों में आया है। और हर जगह सियाक़ो सबाक़ के मुताबिक़ उस लफ़्ज़ के मअनी होंगे।

जिन्न के बुनियादी मअनी मुख़्फ़ी रहने वाली चीज़ के हैं। जो ख़्वाह अपनी बनावट की वजह से मुख़्फ़ी हो या अपनी आदतों के तौर पर मुख़्फ़ी हो और ये लफ़्ज़ मुख़्तलिफ सीग़ों और मुशतक़्क़ात में मुन्तकिल हो कर बहुत से मअनियों में इस्तेमाल होता है और इन सब मअनियों में मुख़्फ़ी और पस पर्दे रहने का मफ़हूम मुश्तरक तौर पर पाया जाता है।

इसलिए जिन्न वाले माद्दे से बनने वाले मुख़्तलिफ अलफ़ाज़ मसलन जिन्न साया करने और अंधेरे का पर्दा डालने, जनीन मां के पेट में मुख़्फ़ी बच्चा, जुनून वह मर्ज़ जो अक़्ल को ढांक दे, जिनान सीने के अन्दर छिपा दिल, जन्नत बाग़ जिसके दरख़्तों के घने साये ज़मीन को ढांप दें, मजन्नत ढाल जिसके पीछे लड़ने वाला अपने आप को छिपा ले, जान्न साँप जो ज़मीन में छिप कर रहता हो, जनन क़ब्र जो मुर्दे को अपने अन्दर छिपा ले और जुन्नत ओढ़नी जो सिर और बदन को ढांप ले के मअनियों में इस्तेमाल होते हैं।

फिर जिन्न का लफ़्ज़ बा-पर्दा औरतों के लिए भी इस्तेमाल होता है। तथा ऐसे बड़े-बड़े रूसा और अकाबिर लोगों के लिए भी बोला जाता है जो अवामुन्नास से इख़्तिलात नहीं रखते। नेज़ ऐसी क़ौमों के लोगों के लिए भी इस्तेमाल होता है जो ज्योग्राफ़िकल ऐतबार से दूर दराज़ के इलाक़ों में रहते और दुनिया के दूसरे हिस्सों से कटे हुए हैं।

इसी तरह तारीकी में रहने वाले जानवरों और बहुत बारीक कीड़ों-मकौड़ों और जरासीम के लिए भी ये लफ़्ज़ इस्तेमाल होता है। इसी लिए हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने रात को अपने खाने-पीने के बर्तनों को ढांप कर रखने का इरशाद फ़रमाया और हड्डियों से इस्तिन्जा से मुन्ही फ़रमाया और उसे जिन्नों यानी च्योंटियों, दीमक और दूसरे जरासीम की खुराक क़रार दिया।

इलावा अज़ीन जिन्न का लफ़्ज़ मुख़्फ़ी अरवाहे खबीसा यानी शैतान और मुख़्फ़ी अरवाहे तय्यिबा यानी मलाइका के लिए भी इस्तेमाल होता है। जैसा कि फ़रमाया مِنَّا الصّٰلِحُوۡنَ وَمِنَّا دُوۡنَ ذٰلِكَ (सूरतुल जिन्न:12) यानी हममें से कुछ नेक लोग हैं और कुछ उसके खिलाफ भी हैं।

अतः जैसा कि ऊपर बताया गया है कि हर जगह सियाक़ो सबाक़ के ऐतबार से उस लफ़्ज़ के मअनी होंगे।

जिन्नों के विषय में मेरा एक तफ्सीली जवाब अल्फज़ल इंटरनैशनल 25 जून 2021 में उर्दू में और अलहकम 02 जुलाई 2021 में अंग्रेज़ी ज़बान में शाया हो चुका है, वहां से भी इस बारे में इस्तिफादा किया जा सकता है।

प्रश्न : जर्मनी से एक महिला ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की खिदमत अक़्दस में इस्तिफ़सार भेजा कि क़ुरआन-ए-करीम में हूरों का जो ज़िक्र है, ग़ैर अज़ जमाअत लोग उसका ग़लत मतलब निकालते हैं। इन हूरों से अस्ल में क्या मुराद है? इसी तरह उन्होंने पूछा कि शादी के बाद औरत के लिए खाविन्द का नाम अपनाना ज़रूरी है? हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला ने अपने मकतूब तिथि 20 दिसम्बर 2021 में इन सवालों के बारे में निम्नलिखित इरशादात फ़रमाए। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया:

जवाब: जन्नत की नेमतों के बारे में क़ुरआन-ए-करीम और अहादीस नबविया सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम में जो उमूर बयान हुए हैं वह सब तम्सीली कलाम है और सिर्फ हमें समझाने के लिए उन चीज़ों की दुनियावी अशिया के साथ मुमासिलत बयान की गई है। इसलिए अल्लाह तआला फ़रमाता है। مَثَلُ الۡجَنَّةِ الَّتِیۡ وُعِدَ الۡمُتَّقُوۡنَ (अर-रअद:36) यानी उस जन्नत की मिसाल जिसका मुत्तक़ीन से वादा किया गया है (ये है)।

फिर अल्लाह तआला क़ुरआन-ए-करीम में फ़रमाता है۔ فَلَا تَعۡلَمُ نَفۡسٌ مَّاۤ اُخۡفِیَ لَهُمۡ مِّنۡ قُرَّةِ اَعۡیُنٍ ۚ جَزَآءًۢ بِمَا كَانُوۡا یَعۡمَلُوۡنَ (अस-सजदा:18) यानी कोई शख़्स नहीं जानता कि उनके लिए उनके अमल के बदले के तौर पर क्या-क्या आंखें ठंडी करने वाली चीज़ें छिपा कर रखी गई हैं।

इसी तरह हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया। يَقُولُ اللّٰهُ تَعَالَى أَعْدَدْتُ لِعِبَادِي الصَّالِحِينَ مَا لَا عَيْنٌ رَأَتْ وَلَا أُذُنٌ سَمِعَتْ وَلَا خَطَرَ عَلَى قَلْبِ بَشَرٍ ذُخْرًا مِنْ بَلْهِ مَا أُطْلِعْتُمْ عَلَيْهِ (सहीह बुखारी किताबुत तफ्सीर) यानी अल्लाह तआला फ़रमाता है कि मैंने अपने नेक बन्दों के लिए वह कुछ तैयार कर रखा है जो न किसी आंख ने देखा है न किसी कान ने सुना है और न किसी इंसान के दिल में उसका ख़्याल गुज़रा है। वह नेअमतें ऐसा ज़खीरा हैं कि उनके मुकाबिल पर जो नेअमतें तुम्हें मालूम हैं उनका क्या ज़िक्र।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम इस बारे में फ़रमाते हैं: खुदा ने बिहिश्त की खूबियां उस पैराए में बयान की हैं जो अरब के लोगों को चीज़ें दिल पसन्द थीं वही बयान कर दी हैं ता इस तरह पर उनके दिल उस तरफ माइल हो जाएं। और दरअस्ल वह चीज़ें और हैं यही चीज़ें नहीं। मगर ज़रूर था कि ऐसा बयान किया जाता ता कि दिल माइल किए जाएं।

(बराहीन-ए-अहमदिया हिस्सा पंजम, रुहानी ख़ज़ायन जिल्द 21 पृष्ठ 424)

पहले वर्णित आयत की वज़ाहत करते हुए हज़ूर अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं: कोई नफ्स नेकी करने वाला नहीं जानता कि वह क्या-क्या नेअमतें हैं जो उसके लिए मुख़्फ़ी हैं। सो खुदा ने उन तमाम नेअमतों को मुख़्फ़ी क़रार दिया जिनका दुनिया की नेअमतों में नमूना नहीं। ये तो ज़ाहिर है कि दुनिया की नेअमतें हम पर मुख़्फ़ी नहीं हैं और दूध और अनार और अंगूर वग़ैरह को हम जानते हैं और हमेशा ये चीज़ें खाते हैं। सो इससे मालूम हुआ कि वह चीज़ें और हैं और उनको इन चीज़ों से सिर्फ नाम का इश्तिराक है। अतः जिसने बिहिश्त को दुनिया की चीज़ों का मजमूआ समझा उसने क़ुरआन शरीफ का एक हर्फ भी नहीं समझा।

(इस्लामी उसूल की फीलासफ़ी, रूहानी ख़ज़ायन भाग 10 पृष्ठ 398,397)

इन नेअमतों के मुख़्फ़ी रखने की हिकमत बयान करते हुए हज़ूर अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं: खुदा के छिपाने में भी एक अज़मत होती है और खुदा का छिपाना ऐसा है जैसे कि जन्नत की निस्बत फ़रमाया فَلَا تَعۡلَمُ نَفۡسٌ مَّاۤ اُخۡفِیَ لَهُمۡ مِّنۡ قُرَّةِ اَعۡیُنٍ (कि कोई जी नहीं जानता कि कैसी-कैसी क़ुर्रते आयून उनके लिए पोशीदा रखी गई है) दर अस्ल छिपाने में भी एक क़िस्म की इज़्ज़त होती है जैसे खाना लाया जाता है तो उस पर दस्तरख़्वान वग़ैरह होता है तो ये एक इज़्ज़त की अलामत होती है।

(अल्-बद्र नंबर 11, जिल्द 1, तिथि 9 जनवरी 1903 पृष्ठ 86)

जन्नत की हूरों का मामला भी तम्सीली कलाम पर मुबनी है। इसलिए क़ुरआन-ए-करीम ने चार जगहों पर हूरों का ज़िक्र फ़रमाया है। पहली दो जगह (सुरः दुख़्खानऔर सूरतुत तूर) में फ़रमाया कि हम जन्नतीयों को बड़ी-बड़ी स्याह आंखों वाली हूरों के साथ अज़्दवाजी रिश्ते में बांध देंगे। और बाकी दो जगह (सूरतुर रहमान और सूरतुल वाक़िआ) में उन हूरों की सिफात बयान की गई हैं कि वह ख़ैमों में महफ़ूज़ याक़ूतो मरजान मोतियों की तरह होंगी। यानी शर्मो हया से मामूर, नेक, पाकबाज़, खूबसूरत और खूब सीरत होंगी।

अतः क़ुरआन-ए-करीम से ये साबित होता है कि हूरों से मुराद नेक और पाक जोड़े हैं जो जन्नत में मोमिन मर्दों और मोमिन औरतों के साथ अज़्दवाजी रिश्ते में बंधे होंगे और उन्हें बतौर इनाम मिलेंगे। उन जोड़े की कैफ़ियत क्या होगी? उसका इल्म अल्लाह तआला ही बेहतर जानता है। इंसान को उसका इल्म उसी वक़्त होगा जब वह जन्नत में जाएगा।

बाकी जहां तक इस बारे में क़ुरआनी तफ़ासीर का ताअल्लुक है तो हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने सूरतुल बक़रा की आयत وَلَهُمۡ فِیۡهَاۤ اَزۡوَاجٌ مُّطَهَّرَةٌ की तफ्सीर बयान करते हुए लिखा है कि जन्नतीयों को वहां पाक साथी यानी पाक बीवियां और पाक खाविन्द मिलेंगे जो एक दूसरे की रूहानी तरक़्क़ी में मदद करने वाले होंगे। इस लिए इस दुनिया के मियां-बीवी अगले जहां में भी अकट्ठा रहना चाहते हैं तो मर्द को अपनी नेकी के साथ अपनी बीवी की नेकी का भी ख़्याल रखना चाहिए और औरत को अपनी नेकी के साथ अपने खाविन्द की नेकी का भी ख़्याल रखना चाहिए और दोनों को एक दूसरे को नेक बनाने की कोशिश करनी चाहिए ता कि ऐसा न हो कि मियां जन्नत में हो और बीवी दोज़ख में हो या बीवी जन्नत में हो और मियां दोज़ख में हो।

(उद्धारित अज़ तफ्सीर-ए-कबीर जिल्द 1 पृष्ठ 252)

हज़रत खलीफ़तुल मसीह सालिस रहमहुल्लाह सुरः दुख़्खान की आयत وَزَوَّجۡنٰهُمۡ بِحُوۡرٍ عِیۡنٍ की तश्रीह करते हुए फ़रमाते हैं कि हम उनकी अज़्वाज को हूर बना देंगे और उन्हें अज़्दवाजी रिश्ते में बांधेंगे। फिर उससे अगली आयत में फ़रमाया कि हम उनके साथ जन्नत में उनकी औलाद को भी जमा कर देंगे। इस जगह बीवी का ज़िक्र इस लिए छोड़ दिया कि زَوَّجۡنٰهُمۡ بِحُوۡرٍ عِیۡنٍ पहली आयत में आ चुका है।

हज़रत नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने एक बुढ़िया से कहा कि जन्नत में कोई बूढ़ी नहीं जाएगी। तो उसने रोना शुरू कर दिया कि या रसूलल्लाह मैं कहां मरूं खपूंगी? तो आप ने फ़रमाया कि मैंने ये तो नहीं कहा कि तुम नहीं जाओगी। मैंने ये कहा है कि जन्नत में कोई बूढ़ी नहीं जाएगी। तुम जवान होने की हैसियत में वहां जाओगी। तो जब बूढ़ी वहां जवान होने की हैसियत में जाएगी तो बदसूरत वहां खूबसूरत हैसियत में जाएगी। जो लंगड़ी लूली यहां से गई है वहां सेहतमंद अज़ा, भरपूर नशोनुमा के साथ जाएगी। तो زَوَّجۡنٰهُمۡ بِحُوۡرٍ عِیۡنٍ कि उनके साथ अज़्दवाजी रिश्ते में बांधा जाएगा बुढ़िया से नहीं, जिस हालत में उसने इस दुनिया में अपनी बीवी छोड़ी बल्कि حُوۡرٍ عِیۡنٍ के साथ जो जवान भी होगी, खूबसूरत भी होगी, नेक भी होगी। बहरहाल यहां हूर का लफ़्ज़ जौज की हैसियत से आया है।

(उद्धारित खुत्बा जुमा तिथि 19 फ़रवरी 1982, खुतबात-ए-नासिर भाग 9 पृष्ठ 387,386)

शादी के बाद बीवी के लिए खाविन्द का नाम अपनाने का सवाल कोई शरीई मसला नहीं है। जिसकी पाबन्दी ज़रूरी हो। अगर दिल चाहे तो अपना लिया जाए और अगर दिल न चाहे तो न अपनाए। और अगर सरकारी काग़ज़ात में नाम अपनाना लाज़िमी हो तो अपना लेना चाहिए, उसमें कोई हर्ज की बात भी नहीं।

सवाल: कनाडा से एक मित्र ने हज़रत अनवर ऐदहिल्लाह तआला बिनस्रहिल अज़ीज़ की सेवा में लिखा कि गैर-मुसलमानों के सामने समलैंगिकता को गलत कैसे सिद्ध किया जाए। साथ ही यह कि ईश्वर के अस्तित्व को सिद्ध करने के लिए हम कहते हैं कि ब्रह्मांड को बनाने वाला कोई तो होगा क्योंकि कोई भी चीज़ अपने आप नहीं बन सकती। फिर सवाल उठता है कि स्वयं ईश्वर को किसने बनाया? हज़रत अनवर ऐदहिल्लाह तआला बिनस्रहिल अज़ीज़ ने अपने 24 दिसंबर 2021 के पत्र में इन सवालों के निम्नलिखित उत्तर प्रदान किए। हज़रत अनवर ने कहा:

उत्तर: ईश्वर ने ब्रह्मांड की प्रत्येक वस्तु को किसी उद्देश्य के लिए बनाया है। इसीलिए कहा: "रब्बना मा ख़लक़ता हाज़ा बातिला" (सूरह आल-ए-इमरान: 191) अर्थात, "हे हमारे पालनहार! तूने यह (संसार) व्यर्थ नहीं बनाया।"

अतः विवाह के बाद पुरुष और स्त्री के आपसी संबंधों का भी एक उद्देश्य है, जो पवित्रता और सदाचार, स्वास्थ्य की सुरक्षा, मानव जाति की निरंतरता और प्रेम तथा शांति की प्राप्ति है।

अतः ईश्वर ने हमें शारीरिक अंग भी एक विशेष उद्देश्य के लिए प्रदान किए हैं। खाना खाने के लिए मुंह बनाया है। अब यदि कोई उसी मुंह के द्वारा गंदगी, कचरा और मिट्टी खाने लगे तो उसे बुद्धिमान तो नहीं कहा जा सकता।

हम अपने दैनिक जीवन में देखते हैं कि हवाई जहाज आदि उड़ाने के लिए एविएशन के सिद्धांत और नियम बने हुए हैं और वाहन चलाने के लिए यातायात के कानून मौजूद हैं। अब यह तो नहीं हो सकता कि कोई व्यक्ति बिना सोचे-समझे और बिना किसी कानून का पालन किए जहाज उड़ाने का प्रयास करे या उसे सड़कों पर दौड़ाने लगे। इसी प्रकार कोई यातायात के कानूनों का पालन किए बिना वाहन सड़क पर ले आए। फिर दुनिया के सभी देशों ने अपने-अपने देशों में आने-जाने के लिए आप्रवासन के कानून बनाए हुए हैं। क्या संभव है कि कोई व्यक्ति इन कानूनों का पालन किए बिना किसी भी देश में प्रवेश कर जाए। इसी प्रकार ईश्वर ने भी मनुष्य को जीवन व्यतीत करने के लिए कुछ कानूनों और सिद्धांतों तथा नियमों का पाबंद बनाया है। यदि मनुष्य इन कानूनों को तोड़ेगा तो वह निश्चित रूप से ईश्वर की नाराजगी का कारण होगा।

चूंकि समलैंगिकता प्रकृति के नियम के विरुद्ध है, इसलिए इसके परिणामस्वरूप बुराइयाँ और बीमारियाँ फैलती हैं और यह सिद्ध बात है कि समलैंगिक लोग एड्स आदि बीमारियों का अधिक शिकार होते हैं।

हम देखते हैं कि जानवर भी अपनी नस्ल की निरंतरता के लिए अपने जोड़े के साथ ही यौन संबंध स्थापित करते हैं। इसके विपरीत मनुष्य, जिसे ईश्वर ने सृषि की श्रेष्ठतम रचना कहकर संपूर्ण संसार की सृषियों पर एक विशेषता प्रदान की है, यदि वह किसी ऐसे तरीके से अपनी यौन भावनाओं की अभिव्यक्ति करे जिसका कोई उद्देश्य न हो और जो कार्य उसकी नस्ल की निरंतरता का कारण भी न हो, तो फिर वह सृषि की श्रेष्ठतम रचना तो क्या, एक सामान्य मनुष्य बल्कि जानवरों से भी निचले दर्जे पर चला जाता है।

यदि मनुष्य बुद्धि से काम ले तो उसे समझ आ जाएगी कि ईश्वर ने यौन अंग भी विशेष उद्देश्य के लिए बनाए हैं। लेकिन समलैंगिकता के शिकार लोग केवल कामवासना के पीछे पड़े रहते हैं। फिर एक ओर वे इस बुराई में फंसे रहते हैं और दूसरी ओर उनकी यह इच्छा होती है कि उनकी अपनी संतान भी हो, जिसके लिए फिर वे दूसरों के बच्चों को गोद लेते हैं।

वास्तव में तो ये सभी दानवीय चालें हैं जिनके द्वारा दानव मनुष्य को उसके जन्म के वास्तविक उद्देश्य से दूर हटाने का प्रयास कर रहा है और वह इन शैतानी कार्यों के द्वारा एक सोचे-समझे षड्यंत्र के तहत मनुष्य को ईश्वर और धर्म से दूर करने की कोशिश कर रहा है ताकि किसी तरह मनुष्य का ईश्वर पर से विश्वास समाप्त हो जाए। समलैंगिकता न तो कोई शारीरिक बीमारी है और न ही यह जन्मजात रूप से किसी मनुष्य में दी गई है। इस बुराई के शिकार लोगों में से अधिकांश को बचपन में गलत प्रकार की फिल्में आदि देखकर यह गंदी आदत पड़ जाती है और कुछ को समाज भी बिगाड़ रहा होता है। इसी प्रकार जब स्कूलों में ऐसे विषय पढ़ाए जाते हैं तो इससे बच्चों और युवाओं में अधिक हताशा पैदा होती है और कुछ बच्चे एवं युवा इस बुराई में फंस जाते हैं।

हम ऐसे लोगों को बुरा नहीं समझते, लेकिन यह कार्य, जिसे ईश्वर ने बुरा कहा है, वह निस्संदेह बुरा है और इस कारण से ईश्वर ने एक समुदाय को दंड भी दिया था। यह तो नहीं हो सकता कि ईश्वर ने आज से हजारों वर्ष पहले एक समुदाय को इस बुराई के कारण दंड दिया हो लेकिन आजकल लोग वही बुराई करें तो ईश्वर उन्हें दंड न दे। ईश्वर की पकड़ के विभिन्न तरीके हैं। इसीलिए ईश्वर ने स्वयं ही इस मामले में दंड भी दिया था। अब भी ईश्वर स्वयं ही निर्णय करेगा कि ऐसे लोगों का क्या करना है। लेकिन हमारी सहानुभूति की माँग यह है कि हम उन लोगों को इन बुरे कार्यों में फंसने से बचाएँ क्योंकि हम धार्मिक दृष्टि से इस चीज को बुरा मानते हैं।

आपके दूसरे प्रश्न का उत्तर यह है कि जब हम यह कहते हैं कि प्रत्येक वस्तु को किसी न किसी सत्ता ने बनाया है और विज्ञान भी इस बात को मानता है कि ब्रह्मांड की कोई भी वस्तु अपने आप नहीं है। इस सिद्धांत पर गौर कर लिया जाए तो बात समझ में आ जाएगी। अतः इस प्रकार ऊपर की ओर बढ़ते हुए कि 'इसे किसने बनाया' और 'उसे किसने बनाया', जहाँ जाकर बात रुकेगी वही ईश्वर की सत्ता है। विज्ञान इसे 'प्रकृति' कहता है और हम ईश्वर और उसके पैगंबरों द्वारा बताई गई शिक्षाओं के अनुसार इस सत्ता को ईश्वर की सत्ता मानते हैं।

शेष रहा ईश्वर की असीम सत्ता, जो मानवीय सीमित ज्ञान से बहुत ऊपर और श्रेष्ठ है, उसके विषय में हमारी वही मान्यता है जो पवित्र कुरआन ने हमें प्रदान की है कि: "कहो, वह अल्लाह एक है। अल्लाह बे-नियाज है। न उसने किसी को जना है और न वह जन्मा है। और उसका कोई समकक्ष नहीं है।" (सूरह अल-इख़्लास) हज़रत मसीह मौऊद (अलैहिस्सलाम) फरमाते हैं: ईश्वर अपनी सत्ता, गुणों और महिमा में एक है, उसका कोई साझी नहीं है। सभी उसके मुहताज हैं। कण-कण उससे जीवन पाता है। वह सभी वस्तुओं के लिए अनुग्रह का स्रोत है और वह स्वयं किसी से अनुग्रह प्राप्त नहीं करता। वह न किसी का पुत्र है और न किसी का पिता, और कैसे हो सकता है क्योंकि उसका कोई समान नहीं है। (इस्लामी उसूल की फिलासफी, रूहानी खज़ाइन खंड 10, पृष्ठ 417) हज़रत (मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम) फरमाते हैं: तुम्हारा ईश्वर वह ईश्वर है जो अपनी सत्ता और गुणों में अद्वितीय है। न कोई सत्ता उसकी सत्ता के समान अनादि और अनंत है और न किसी वस्तु के गुण उसके गुणों के समान हैं। मनुष्य का ज्ञान किसी शिक्षक का मुहताज है और फिर सीमित है, किंतु उसका (ईश्वर का) ज्ञान किसी शिक्षक का मुहताज नहीं है और इस सबके बावजूद असीम है। मनुष्य की सुनने की शक्ति हवा की मुहताज है और सीमित है, किंतु ईश्वर की सुनने की शक्ति अपनी स्वाभाविक शक्ति से है और सीमित नहीं है। और मनुष्य की देखने की शक्ति सूर्य या किसी अन्य प्रकाश की मुहताज है और फिर सीमित है, किंतु ईश्वर की देखने की शक्ति अपने स्वाभाविक प्रकाश से है और असीम है। ऐसा ही मनुष्य की रचना करने की शक्ति किसी पदार्थ की मुहताज है और साथ ही समय की मुहताज है और फिर सीमित है, किंतु ईश्वर की रचना करने की शक्ति न किसी पदार्थ की मुहताज है, न किसी समय की मुहताज और असीम है, क्योंकि उसके सभी गुण अतुलनीय और बेजोड़ हैं और जैसे कि उसका कोई समान नहीं है, उसके गुणों का भी कोई समान नहीं है। (लेक्चर लाहौर, रूहानी खज़ाइन खंड 20, पृष्ठ 154-155)

सवाल: नारोवाल, पाकिस्तान से एक मित्र ने हज़रत अनवर ऐदहिल्लाह तआला बिनस्रहिल अज़ीज़ की सेवा में पूछा कि क्या नमाज़-ए-जनाजा (अंतिम संस्कार की प्रार्थना) नमाज़ है या इसे केवल नमाज़ का नाम दे दिया गया है क्योंकि इसके लिए निषिद्ध समय का ध्यान नहीं रखा जाता? साथ ही, क्या एक मस्जिद में दो जुमा (शुक्रवार की congregational प्रार्थना) हो सकते हैं? रबवाह में ड्यूटी पर तैनात लोग उसी मस्जिद में अलग खुत्बा (उपदेश) देकर अलग जुमा पढ़ते हैं, जबकि फ़िक़्ह-ए-अहमदिया (अहमदीय न्यायशास्त्र) में इसका खंडन किया गया है? हज़रत अनवर ऐदहिल्लाह तआला ने अपने 07 जनवरी 2022 के पत्र में इन प्रश्नों के बारे में निम्नलिखित निर्देश दिए। हज़रत अनवर ने कहा:

उत्तर: नमाज़-ए-जनाजा भी एक प्रकार की नमाज़ ही है, लेकिन चूंकि इसमें नमाज़-ए-जनाजा अदा करने वालों के सामने मृतक का शव मौजूद होता है, इसलिए इसमें रुकू (झुकना) और सजदा (दंडवत) नहीं रखे गए हैं ताकि किसी भी प्रकार के मूर्तिपूजा की संभावना पैदा न हो। इसीलिए हज़रत मसलेह मौऊद (रज़ी अल्लाहु अन्हु) ने तफ्सीर-ए-कबीर में, जहाँ विभिन्न नमाज़ों का विवरण बताया है, वहाँ नमाज़-ए-जनाजा का विवरण बताते हुए कहा है: इन नमाज़ों के अलावा एक आवश्यक नमाज़ जनाजे की नमाज़ है। यह सामूहिक रूप से अनिवार्य (फर्ज़-ए-किफाया) है... जनाजे की नमाज़ में दूसरी नमाज़ों के विपरीत रुकू और सजदा नहीं होता, बल्कि इसके सभी भाग खड़े-खड़े अदा किए जाते हैं... इस नमाज़ के चार भाग होते हैं। इमाम किबला की ओर मुंह करके खड़ा होता है और ऊँची आवाज़ से सीने पर हाथ बांधकर तकबीर (अल्लाहु अकबर) कहकर इस नमाज़ को शुरू करता है। इस नमाज़ से पहले इकामत (प्रार्थना के लिए खड़े होने का ऐलान) नहीं कही जाती।

(तफ्सीर-ए-कबीर खंड 1, पृष्ठ 115)

शेष ...

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की बरकतों की हामिल ऐतिहासिक स्पेन 2013 की यात्रा

(भाग -1)

मस्जिद बशारत, पेदरोआबाद के निर्माण के लगभग 32 वर्ष बाद, वालेंसिया (Valencia) स्थान पर एकेश्वर भगवान की उपासना के लिए निर्मित की जाने वाली अहमदिया मुस्लिम जमाअत की दूसरी मस्जिद 'मस्जिद बैत-उर-रहमान' के उद्घाटन और स्पेन के लोगों को इस्लाम के सुंदर और शांतिपूर्ण सिद्धांतों का संदेश देने के लिए, हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यद-हुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ का तीसरा धन्य और धर्मयात्रा का दौरा। वालेंसिया में शुभ आगमन। व्यक्तिगत और पारिवारिक मुलाकातें। जुमे के प्रवचन और जुमे की नमाज के साथ उद्घाटन।

(वालेंसिया (स्पेन) में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की गतिविधियों की संक्षिप्त रिपोर्ट)

26 मार्च 2013, मंगलवार

आज का दिन अहमदिया मुस्लिम जमाअत के इतिहास में और विशेष रूप से अहमदिया मुस्लिम जमाअत स्पेन (Spain) के इतिहास में एक अत्यंत महत्वपूर्ण और शुभ दिन है। आज हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने मस्जिद बशारत, पेदरोआबाद के निर्माण के लगभग 32 वर्ष बाद, वालेंसिया (Valencia) स्थान पर एकेश्वर भगवान की उपासना के लिए निर्मित की जाने वाली, अहमदिया मुस्लिम जमाअत की दूसरी मस्जिद 'मस्जिद बैत--उर-रहमान' के उद्घाटन के लिए और इस देश के उन निवासियों को, जिनके पूर्वज कभी मुसलमान हुआ करते थे, फिर से अपने साथ जोड़ने के लिए, इस्लाम के सुंदर और शांतिपूर्ण सिद्धांतों का संदेश देने के लिए, स्पेन की यह तीसरी यात्रा प्रारंभ की।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ हवाई अड्डे के लिए सवा दस बजे अपने निवास स्थान से बाहर पधारे। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ को विदाई कहने के लिए जमाअत के पुरुष और महिला सदस्य सुबह से मस्जिद बैतुल फ़ज़ल, लंदन के परिसर में एकत्र होने लगे थे। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने अपना हाथ ऊपर उठाकर सभी को सलाम किया और प्रार्थना करवाई। इसके बाद हवाई अड्डे के लिए प्रस्थान हुआ।

ग्यारह बज कर दस मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की हीथ्रो हवाई अड्डे पर पधारी हुई। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के आगमन से पहले ही सामान की बुकिंग और बोर्डिंग पास प्राप्त करने की प्रक्रिया पूरी हो चुकी थी। हवाई अड्डे पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ को विदाई कहने के लिए माननीय रफ़ीक अहमद हयात साहिब, अमीर जमाअत यूके, माननीय मंसूर अहमद शाह साहिब, उप-अमीर यूके, माननीय अख़लाक़ अहमद अंजुम साहिब, दफ़्तर तबलीग, माननीय ज़हूर अहमद साहिब, दफ़्तर निजी सचिव और माननीय मेजर महमूद अहमद साहिब, अफसर विशेष सुरक्षा, अपनी सुरक्षा टीम और सेवाकर्मियों के साथ आए थे। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने हवाई अड्डे के अंदर जाने से पहले इन सभी सज्जनों को सलाम किया और हवाई अड्डे के अंदर पहुंच गए और लगभग एक बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ विमान में सवार हुए।

ब्रिटिश एयरवेज की उड़ान BA 464 अपने निर्धारित समय से लगभग एक घंटा 20 मिनट की देरी के बाद एक बज कर 50 मिनट पर स्पेन के अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे मैड्रिड (Madrid) के लिए रवाना हुई। समय की उपयुक्तता को देखते हुए हुज़ूर अनवर अय्यद-हुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने ज़ुहर और असर की नमाजें विमान में ही अदा कीं और स्नेहवश काफिले के सदस्यों से कहा कि उड़ान में देरी की वजह से स्पेन में नमाजें अदा करने का समय कम हो जाएगा। इसलिए विमान में ही अदा कर लें। स्पेन के स्थानीय समय के अनुसार विमान चार बज कर 50 मिनट पर मैड्रिड के अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे पर उतरा और इस प्रकार हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के पावन चरण तीसरी बार स्पेन की धरती पर पड़े।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ का विमान टैक्सी करता हुआ अपने निर्धारित स्थान पर आकर रुका। एक विशेष प्रोटोकॉल व्यवस्था के तहत हवाई अड्डे के प्रबंधन की ओर से हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के लिए एक विशेष कार और काफिले के सदस्यों के लिए एक कार विमान की सीढ़ियों के पास खड़ी की गई थीं। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ कार में विराजमान हुए और यह कारें एक विशेष लाउंज तक ले आईं जहां कुछ ही मिनटों में आव्रजन की प्रक्रिया पूरी हुई और हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ इस लाउंज के विशेष दरवाजे से हवाई अड्डे से बाहर पहुंच गए। इस दरवाजे के ठीक बगल में ही हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ और काफिले के लिए कारें खड़ी की गई थीं।

माननीय मुबारक अहमद साहिब, अमीर जमाअत स्पेन ने अपनी कार्यकारिणी के कुछ सदस्यों के साथ हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ का स्वागत किया। सेवाकर्मियों की सुरक्षा टीम भी अपनी ड्यूटी पर मौजूद थी।

पहले से निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार हवाई अड्डे से मैड्रिड के रेलवे स्टेशन के लिए प्र-स्थान था और फिर वहां से रेलगाड़ी (Train) द्वारा वालेंसिया (Valencia) के लिए प्रस्थान था। पांच बज कर दस मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ हवाई अड्डे से रवाना होकर आधे घंटे की यात्रा के बाद पांच बज कर 40 मिनट पर मैड्रिड के अंतर्राष्ट्रीय रेलवे स्टेशन पर पधारे। इस रेलवे स्टेशन से देश के भीतर विभिन्न शहरों के अलावा यूरोप के विभिन्न देशों के लिए भी गाड़ियां जाती हैं। रेलवे स्टेशन पर स्थित एक होटल में स्थानीय जमाअत ने ताज़गी के सामान और भोजन का प्रबंध किया हुआ था। यहां लगभग आधे घंटे से अधिक समय तक ठहराव रहा। स्टेशन पर एक वरिष्ठ अहमदी सदस्य माननीय जोस मारिया गार्ज़ोन (Jose Maria Garzon) साहिब, जिनका इस्लामी नाम यूसुफ है, हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ से मुलाकात के लिए आए और हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के साथ तस्वीर खिंचवाने का सौभाग्य भी प्राप्त किया।

स्टेशन की एक स्टाफ अधिकारी ने आकर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रि-हिल अज़ीज़ का स्वागत किया और फिर अपने साथ सुरक्षा चरणों से गुज़ारते हुए रेलगाड़ी के उस विशेष डिब्बे (Cabin) में छोड़ने आई जो स्थानीय जमाअत ने इस यात्रा के लिए आरक्षित करवाया था। तीन सौ किलोमीटर प्रति घंटे की गति से चलने वाली यह रेलगाड़ी EVE एक्सप्रेस अपने समय पर छह बज कर 40 मिनट पर मैड्रिड से वालेंसिया के लिए रवाना हुई। मैड्रिड से वालेंसिया की दूरी 360 किलोमीटर है। यह रेलगाड़ी आम रेलगाड़ियों की तरह नहीं है बल्कि विमान के क्लब (Club) क्लास की तरह के इसके डिब्बे हैं जिनमें बीस से बाईस सीटें होती हैं। स्क्रीन पर रेलगाड़ी का मार्ग, नक्शा, गति, बाहरी तापमान लगातार दिखाया जा रहा होता है और नियमित रूप से ताज़गी के सामान और अन्य सेवा उपलब्ध कराई जाती है।

रेल यात्रा के दौरान हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने स्नेहवश अपने वीडियो कैमरे से, अपने साथ यात्रा कर रहे सदस्यों का वीडियो बनाया। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने अपने मोबाइल फोन पर MTA इंटरनेशनल की Live सेवा भी दिखाई और स्नेहवश कहा कि देखिए MTA की Live सेवा यहां भी फोन पर आ रही है। इस समय हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ का एक जुमे का प्रवचन प्रसारित हो रहा था।

लगभग एक घंटा 35 मिनट की यात्रा के बाद रेलगाड़ी अपने समय पर आठ बज कर 15 मिनट पर वालेंसिया (Valencia) के रेलवे स्टेशन पर पहुंची। जैसे ही हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ गाड़ी से बाहर पधारे, माननीय डॉक्टर अता इलाही मंसूर साहिब, सदर जमाअत वालेंसिया और माननीय अब्दुस्सबूर नोमान साहिब, मुबल्लिग इंचार्ज स्पेन ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ का स्वागत किया और बधाई दी और श्रीमती सामिना मंसूर साहिबा, सदर लज्ना वालेंसिया ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ बेगम साहिबा (अल्लाह उनकी रक्षा करे) का स्वागत किया।

स्टेशन पर यहां की स्थानीय पुलिस ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ को पूर्ण सुरक्षा प्रदान की और एक विशेष प्रबंध के तहत एक ख़ास रास्ते से स्टेशन से बाहर ले जाया गया जहां दरवाजे के ठीक बगल में कारें खड़ी की गई थीं। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ कार में विराजमान हुए और स्टेशन से रवाना होकर आधे घंटे की यात्रा के बाद लगभग नौ बजे वालेंसिया के उपनगरीय क्षेत्र में पधारे जहां स्थानीय जमाअत ने एक खुले और हरे-भरे स्थान पर ठहरने का प्रबंध किया हुआ था। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ अपने निवास स्थान के हिस्से में पहुंच गए।

नौ बज कर 25 मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ नमाज मग़रिब और इशा अदा करने के लिए नवनिर्मित मस्जिद, मस्जिद बैतुर-रहमान पधारे और नौ बज कर 35 मिनट पर यहां पधारे जहां स्थानीय जमाअत के पुरुष, महिला और बच्चों ने अपने प्यारे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ का स्वागत किया और नारे लगाते हुए और अपने हाथ हिलाते हुए हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ का स्वागत किया।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने मस्जिद की इमारत और इससे सटे विभिन्न हिस्सों का निरीक्षण किया।

(मस्जिद के विस्तृत विवरण एक अलग रिपोर्ट में शामिल होंगे।)

नौ बज कर 45 मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने नमाज मग़रिब और इशा एक साथ पढ़कर पढ़ाईं। नमाजों की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ वापस अपने निवास स्थान पर पहुंच गए।

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.akhbarbadr.in

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2023-2025 Vol. 10 Thursday 23-30 October 2025 Issue No. 43-44

MANAGER :
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Mobile : +91-9915379255
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com
www.alislam.org/badr

स्पेन में अहमदियत के प्रसार का संक्षिप्त इतिहास

स्पेन, यूरोप के उन देशों में से है जहां कमोबेश आठ सौ साल तक मुसलमानों ने बड़ी शान और प्रतिष्ठा के साथ शासन किया लेकिन अंततः सांप्रदायिक साजिशों और आपसी कपट के परिणामस्वरूप अत्यंत दयनीय और दर्दनाक परिस्थितियों में इस देश से मुसलमानों का नाम मिट गया और इस्लाम एक पुरानी कहानी बनकर रह गया।

मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने स्पेन का उल्लेख करते हुए 1946 ई. में अपने एक जुमे के प्रवचन में कहा था:

'वे लोग जिन्होंने सैकड़ों वर्षों तक स्पेन पर शासन किया वे आज स्पेन के अधीन हैं और वे लोग जो स्पेन के बादशाह थे आज स्पेन के गुलाम हैं। ये घटनाएं ऐसी महत्वपूर्ण हैं जिन्हें कभी भी भुलाया नहीं जा सकता। आठ सौ साल का शासन कोई मामूली बात नहीं है। लेकिन आज इस देश की यह स्थिति है कि इसमें किसी मुसलमान की सुगंध तक नहीं मिलती। अंदलुस में मुसलमानों को जो शान और प्रतिष्ठा प्राप्त थी और फिर उसके बाद वहां के मुसलमानों के साथ जो व्यवहार किया गया और जिस तरह उन्हें वहां से निकाला गया। जब मैंने ये हालात इतिहास की किताबों में पढ़े तो मैंने संकल्प किया था कि यदि अल्लाह तआला ने मुझे सामर्थ्य दी तो मैं उन क्षेत्रों में अहमदियत के प्रसार के लिए अपने प्रचारक भेजूंगा जो इस्लाम को दोबारा उन क्षेत्रों में प्रमुख बनाएंगे और इस्लाम का झंडा दोबारा इस देश में गाड़ देंगे।'

फिर आप (उन पर अल्लाह की दया हो) ने एक मुसलमान स्पेनिश जनरल अब्दुल अज़ीज़ की देशभक्ति का उल्लेख करते हुए एक व्याकुलता प्रकट की:

'जब स्पेन में मुसलमानों की शक्ति इतनी कमजोर हो गई कि उनके हाथ में सिर्फ एक किला रह गया जो आखिरी किला था तो ईसाइयों ने उनके सामने कुछ शर्तें रखीं और कहा कि यदि बचना चाहते हो तो उन्हें मान लो। वे शर्तें ऐसी थीं कि जिन्हें मानकर इस्लाम स्पेन में सम्मान के साथ नहीं रह सकता था। तत्कालीन बादशाह उन शर्तों को मानने के लिए तैयार हो गया। दूसरे जनरल भी तैयार थे। मगर यह जनरल खड़ा हुआ और कहा कि हे लोगो! क्या कर रहे हो? क्या तुम्हें विश्वास है कि ईसाई अपने वादों को पूरा करेंगे। हमारे पूर्वजों ने स्पेन में इस्लाम का बीज बोया था अब तुम लोग अपने हाथों से इस पेड़ को गिराने लगे हो। ... हममें से हर एक को चाहिए कि मर जाए मगर इन शर्तों को स्वीकार न करे। इस तरह यह अपमान तो नहीं उठाना पड़ेगा कि अपने हाथ से शासन दुश्मन को दे दें... सबने मना कर दिया मगर उसने कहा कि यदि तुम इस बेइज्जती को पसंद करते हो तो करो मैं तो अपने हाथ से इस्लामी झंडा दुश्मन के हवाले नहीं करूंगा।'

'लगभग एक लाख की सेना थी जो किले के बाहर एकत्र थी। वह अकेला ही तलवार लेकर निकला। दुश्मन पर हमला कर दिया और लड़ते-लड़ते शहीद हो गया। निस्संदेह उसकी शहादत के बावजूद स्पेन में मुसलमानों का शासन तो कायम न रह सका मगर उसका नाम हमेशा के लिए अमर रह गया और मौत उसे मिटा न सकी। वह बादशाह और जनरल जिन्होंने उसके सुझाव को स्वीकार नहीं किया और अपनी जानें बचाना चाहीं वे मिट गए। उनका उल्लेख पढ़कर और सुनकर हम अपने मन को बड़े जोर से उन पर लानत करने से रोकते हैं। लेकिन कभी स्पेन की स्थितियों का मैं अध्ययन नहीं करता या कभी ऐसा नहीं हुआ कि ये बातें मेरे मन में आई हों और उस जनरल के लिए प्रार्थनाएं न निकलती हों। उसके रक्त की बूंदें आज भी स्पेन की घाटियों में हमें आवाज़ें देती हैं कि आओ! और मेरे रक्त का बदला लो। ... आज भी उसकी आकर्षण शक्ति हमें स्पेन की ओर खींच रही है और यदि मुसलमानों की देशभक्ति कायम रही और जैसा कि मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के आगमन से प्रकट होता है न सिर्फ कायम रहेगी बल्कि उन्नति करेगी और पहले से बढ़कर प्रकट होगी। तो वह दिन दूर नहीं जब उस जनरल के रक्त की बूंदों की पुकार, उसकी जंगलों में चीखती हुई आत्मा अपनी आकर्षण शक्ति दिखाएगी और सच्चे मुसलमान फिर स्पेन पहुंचेंगे और वहां इस्लाम का झंडा गाड़ देंगे। उसकी आत्मा आज भी हमें बुला रही है और हमारी आत्माएं भी यह पुकार रही हैं कि हे वफादार शहीद! तुम अकेले नहीं हो। मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के धर्म के सच्चे सेवक प्रतीक्षा कर रहे हैं। जब अल्लाह तआला की ओर से आवाज आएगी वह परवानों की तरह इस देश में प्रवेश करेंगे और अल्लाह तआला के प्रकाश को वहां फैलाएंगे।'

अतः मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के धर्म के सच्चे सेवक परवानों की तरह स्पेन की धरती में प्रवेश किए।

सबसे पहले मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु के निर्देश पर लंदन से 1936 ई. में हज़रत मौलाना अब्दुर्रहीम दर्द साहिब ने स्पेन का दौरा किया।

फिर पहले औपचारिक प्रचारक के रूप में मलिक मुहम्मद शरीफ गुजराती साहिब 1 फरवरी 1936 ई. को क़ादियान से रवाना होकर 10 मार्च 1936 ई. को स्पेन की राजधानी मैड्रिड पहुंचे और प्रचार का कार्य शुरू किया। अतः स्पेन में अहमदियत स्वीकार करने वाले सबसे पहले व्यक्ति का नाम Mr. Count Antonio Logothete था। आपका इस्लामी नाम गुलाम अहमद रखा गया। आपकी पत्नी भी अहमदियत में शामिल हुईं। उनका इस्लामी नाम आमना रखा गया।

स्पेन में गृहयुद्ध के कारण मलिक मुहम्मद शरीफ साहिब को आदेशानुसार यह देश छोड़ना पड़ा। जब आप यहां से रवाना हुए उस समय तक पांच व्यक्तियों से मिलकर जमाअत स्थापित हो चुकी थी।

मार्च 1946 ई. में जब भारत में कैबिनेट मिशन भारतीय राजनीति की समस्याएं सुलझाने आया तो इस मिशन को संबोधित करते हुए जहां हज़रत खलीफा मसीह सानी रज़ियल्लाहु अन्हो ने राजनीतिक मुद्दों पर चर्चा की वहीं हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने स्पेन में फिर से इस्लाम के पुनरुत्थान के संबंध में कहा:

'क्या स्पेन से निकल जाने के कारण हम उसे भूल गए हैं? हम निश्चित रूप से उसे नहीं भूले। हम निश्चित रूप से एक बार फिर स्पेन को लेंगे। हमारी तलवारें जिस स्थान पर जाकर कुंद हो गईं वहां से हमारी जुबानों का हमला शुरू होगा और इस्लाम के सुंदर सिद्धांतों को प्रस्तुत करके हम अपने भाइयों को स्वयं अपना अंग बना लेंगे।'

इस घोषणा के तीन महीने बाद मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु के आदेश के अनुसार मौलाना करम इलाही ज़फ़र साहिब और मौलवी मुहम्मद इशाक साकी साहिब 10 जून 1946 ई. को स्पेन की राजधानी मैड्रिड पहुंचे। और सितंबर 1946 ई. में उन्हें पहला फल प्राप्त हुआ। एक रूसी अनुवादक एनरिक कु ज़मिन (Enrique Ku Zmin) ने अहमदियत स्वीकार की। मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने उनका इस्लामी नाम मुहम्मद अहमद रखा। इस प्रकार एक साल के अंदर ही तीन और स्पेनिश निवासियों ने अहमदियत स्वीकार की।

1947 ई. में भारत-पाकिस्तान के विभाजन के कारण आर्थिक कठिनाइयां पैदा हुईं। मौलवी मुहम्मद इशाक साहिब को वापस पाकिस्तान बुला लिया गया और यह प्रस्ताव रखा गया कि मिशन बंद कर दिया जाए।

मिशन बंद करने के इस निर्देश पर माननीय करम इलाही ज़फ़र साहिब ने लिखा:

'मुझे केंद्र की ओर से निर्देश मिला है कि मिशन बंद करके लंदन चला जाऊं। यह क्षण मेरे लिए बहुत कठिन था। मैंने कई दिन प्रार्थनाएं कीं और अल्लाह तआला से सहायता मांगी। मेरा मन नहीं करता था कि इस धरती को छोड़ूं जहां अभी इस्लाम का पौधा बिल्कुल कोमल और कमजोर था। यह बात तो तय थी कि केंद्र मेरा खर्च उठाने की स्थिति में नहीं है। ऐसे में सवाल उठता था कि क्या मैं अपना खर्च यहां स्वयं उठा सकूंगा। कई दिन सोचने के बाद अंत में मैंने मन को मज़बूत किया और मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु की सेवा में लिखा कि मिशन बंद न किया जाए। जमाअत खर्च भेजे या न भेजे, मैं अपनी आय स्वयं पैदा करूंगा और इस धरती पर इस्लाम के झंडे को झुकने नहीं दूंगा। मैंने यह निर्णय किया कि मैं गलियों में फेरी लगाकर गुजारा करूंगा।'

अतः मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने स्नेहवश आपको इसकी अनुमति दे दी। आपने रेहड़ी लगाकर और इत्र बेचकर अपना गुजारा भी किया और मिशन भी चलाया। आपने जिन अत्यंत कष्टदायक और प्रतिकूल और कठिन परिस्थितियों में काम किया उसकी कहानी बहुत लंबी और बहुत दर्दनाक है। यह साहसी व्यक्ति अकेला, तन्हा घोर विरोध के तूफानों से लड़ता रहा लेकिन दृढ़ रहा। आपके कदम उस समय भी नहीं डगमगाए जब पुलिस बार-बार आपको गिरफ्तार करके थाने ले जाती और हवालात में बंद कर देती। और आपके दृढ़ संकल्प और साहस में उस समय भी कोई कमी नहीं आई जब विरोधी आपकी रेहड़ी को उलट देते और इत्र की शीशियां गिरकर टूट जातीं। आप एक-एक शीशी को इकट्ठा करते और किसी दूसरी जगह जाकर स्टाल लगा लेते। आपने उस समय भी अपना हौसला नहीं हारा जब सरकार, सेना और पुलिस की ओर से आपको देश से निकाले जाने की धमकियां दी जातीं। बार-बार आपको डराया और धमकाया जाता और जब स्टाल लगाते तो हर समय गुप्तचर पुलिस आपके सिर पर खड़ी रहती और बार-बार आपको पुलिस स्टेशन जाना पड़ता लेकिन आप हर पल और हर समय प्रचार करते रहे और स्टाल पर आने वाले हर व्यक्ति को इस्लाम अहमदियत का संदेश पहुंचाते और गुप्तचर पुलिस जो सिर पर खड़ी होती उससे भी भय नहीं खाते। लगातार 25 साल तक यही अल्लाह का भक्त अकेला, तन्हा इस विरोध का सामना करता रहा। यहां तक कि 1970 ई. में धार्मिक स्वतंत्रता का आरंभ हुआ। जमाअत

शेष पृष्ठ 7 पर

इस्लाम और जमाअत अहमदिय्या के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 3010 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)

Web.www.alislam.org
www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India.
Editor:Shaikh Mujahid Ahmad